શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/-

SEPT '07



૧૦ માં પ્રાકટ્યોત્સવ પ્રસંગે પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીના અલૌકિક દર્શન.

પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



१५ अगस्त को सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का अलौकिक दर्शन ।



सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का श्रावण मास में पंचमेवा से अलंकृत झूले के साथ दर्शन ।



श्रावण मास में अहमदाबाद मंदिर में धर्मदेव भक्तिमाता हरिकृष्ण महाराज का फूलों से अलंकृत झूले में बैठकर दर्शन, तथा बालस्वरूप घनश्याम महाराज का पंचमेवा एवं स्मयों से झूले को सजाकर दर्शन, रंग महल में घनश्याम महाराज का पंचमेवा से अलंकृत झूले में दर्शन ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५.
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १ अंक : ५ सितम्बर -२००७

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	"आनंद की वर्षा" : वाणी ही दांत के चौभर को जानती है	४
४.	एक ही इमान	५
५.	मुली मंदिर के कविश्री देवानंद स्वामी	७
६.	अपने संप्रदाय में झूलोत्सव की परम्परा	८
७.	महाराजने मंत्रसिद्ध मगनीराम का मानस परिवर्तन किया	९
८.	सत्संगी की रोटी	११
९.	I.S.S.O. का इतिहास	१२
१०.	सत्संग सुरभि : "संसार थुं सरसो रहे पण मन मारी पास"	१४
११.	सत्संग बालवाटिका	१५
	(१) निर्मानानंद कैसे बन शकते हैं ?	
	(२) तुलसी के वृक्ष में मोती	
१२.	भक्तिसुधा	१८
	(१) सहजानंद स्वामी - श्री स्वामिनारायण भगवान बने	
	(२) सुनहरा इतिहास	
	(३) चातुर्मास	
	(४) सच्चे सत्संगी कब हो शकते हैं ?	
	(५) कडवी माधुरी बनी	
१३.	प्रश्नपेटी	२१
१४.	समाचारवृत्तांत	२२

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी शास्त्री निर्गुणदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्



तन्त्रीश्री की तरफ से.....

सत्संग का यथार्थ आनंद लेना हो तो माहात्म्य ज्ञान से ही प्राप्त कर शकते हैं अन्यथा भगवान का सुख उसे साध्य नहीं होगा । माहात्म्य ज्ञान के विना सत्संग में रहने वाला व्यक्ति चाहे कैसा भी हो खूब सेवा करता हो फिर भी अर्ध दग्ध लकडी के समान ही उसे समझना चाहिये । भगवान श्री स्वामिनारायण ने हम सभी पर कृपा करके मानव देह धारण करके अपने मूल स्वस्म को पहचान कराकर इस सत्संग में सदा के लिये विराजमान हैं । अपने हाथों से नव मंदिरो का निर्माण कराकर - श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव तथा अपने स्वस्म की मूर्तियों को प्रतिष्ठित किया । उन सभी मूर्तियों में अखंड स्म से स्वयं विराजमान हैं । अपने हाथों से अपने पद पर धर्मवंशी आचार्य की स्थापना करके त्यागी, गृही के गुस्मद पर आचार्य के स्वस्म में स्वयं बिराजमान हैं । इनमें मनुष्यभाव कभी न लाकर ये स्वयं श्रीहरि हैं ऐसा मानकर मन-वचन-कर्म से इनकी आज्ञा में रहना ही श्रेयस्कर है । इसके साथ ही भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा लिखी गयी शिक्षापत्री या अन्य ग्रन्थ को उन्हीं का स्वस्म मानकर शास्त्र की आज्ञा में रहना, सिद्धि-प्रसिद्धि से दूर रहकर सत्संग परायण संत एवं हरिभक्तों को ब्रह्म की मूर्ति मानकर परस्पर आदर करना । भगवान को समर्पित होकर भगवान की सेवा-भजन करने वाले संत-भक्त मात्र भगवान का ही लक्ष्य रखते हैं । ऐसी महिमा समझकर देव-शास्त्र, आचार्य, संत एवं सत्संगियों में ऐसा भाव रखने से सदा दिव्य भाव बना रहेगा । महिमा के विना का व्यक्ति सत्संगमें आकर बहुत दुःखी होता है । यह सत्संग महिमा का सत्संग है । इसलिये महिमा स्मी ज्ञान का चश्मा लगाने वाले सत्संगी से श्रीहरि थोडा भी दूर नहीं रहते, ऐसा न करने पर प्रभु करोडो गाँव दूर हो जाते हैं । जो अनंत जन्म लेंगे फिरभी भाव विना होने से अंतर दूर नही होगा । महिमा के विना सत्संग में रहकर भी अवगुण मिटता नहीं है । जिसके फल स्वस्म पाप की पोटली बांधता ही रहता है । इसलिये सत्संग में आकर महिमा का सदा विचार करते हुए दिव्य भाव रखना कि हमारी ऐसी अहोभाग्य जो ऐसा दिव्य सत्संग मिला ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- साधु नारायणस्वस्मदास का

जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अगस्त-२००७



२९ जुलाई से ७ अगस्त २००७ लंडन विल्सडनलेन श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

८. प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के १० वें प्रागट्योत्सव प्रसंग को स्वयं अपने शुभ सांनिध्य में तथा प.पू. बडे महाराजश्री की उपस्थिति में संत-हरिभक्तों के उत्साह के साथ धूम-धाम से सम्पन्न किये ।

१३. ऊँझा श्री स्वामिनारायण मंदिर में मिकेनिजम के झूलोत्सव का उद्घाटन अपने हाथों से किये ।

१५. श्री बलदेवप्रसाद त्रिवेदी के यहाँ पदार्पण, मेमनगर ।

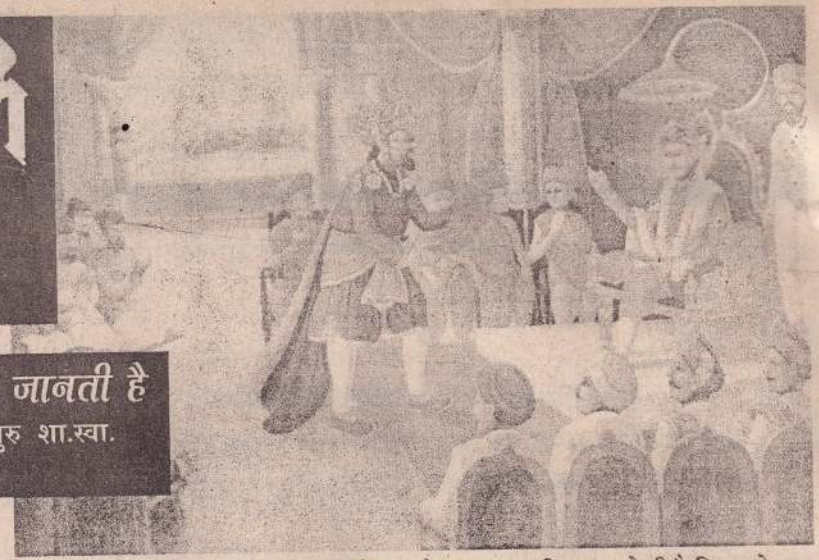
१६. श्री मौलिककुमार कनुभाई पटले के यहाँ पदार्पण, अंबावाडी ।

१८. श्री घनश्यामभाई अमृतभाई सुखडिया के यहाँ पदार्पण, बापुनगर ।
कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर के झूलोत्सव पर पदार्पण ।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा ज्ञानसत्र - कथा पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।

२०. से अमेरिका के I.S.S.O. में संस्थापित नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर चेरिहिल में प्राण प्रतिष्ठा - पारायण एवं यज्ञ आदि के प्रसंग पर तथा बोस्टन मंदिर के पाटोत्सव - पारायण प्रसंग पर एवं कोलोनीया मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर अमेरिका में सत्संग प्रचारार्थ विचरण ।

आनंदनी हेली



वाणी ही दांत के चौभर को जानती है

- शास्त्री स्वामी हरिजीवनदास गुरु शा.स्वा. हरिकेशवदासजी

प्रभु ! नवाब साहब आपका दर्शन करना चाहते हैं। कृपा करके दर्शन देने के लिये दरबार में पधारो । यहाँ सभीआपकी राह देख रहे है। इस तरह निवेदन करके नवाब का दूत चला गया । जूनागढ का नवाब, ब्रह्मानदं स्वामी के काव्यो पर खूब प्रभावित हुआ था । भगवान स्वामिनारायण के प्रति अत्यंत प्रेम था । इसलिये नवाब के भाव भरे आमंत्रण को मान देकर संत, पार्षद को साथ लेकर महल में पधारे । नवाब महाराज के स्वागत की पूर्ण तैयारी किया था। उच्च आसन पर आदर के साथ बैठाया और हाथ जोड़कर कहा हे प्रभु ! आप हमारे शहर को पावन किये, हमें बहुत खुशी हुई ।

थोड़े समय बैठने के बाद नवाबने पुरन: कहा, हम यहाँ पर धार्मिक संवाद रखे है, जिस में हमारे पुराणीजी और नित्यानंद स्वामी चर्चा करें तो अच्छा रहेगा । दोनो का संवाद हुआ । पुराणीने पूछा, लोग भगवान के चरणारविंद को ही क्यों पग लगते हैं ? हाथ और मस्तक को क्यों नहीं लगते ? ''वन्दे महापुस्र ते चरणारविन्दम्'' इस श्लोक द्वारा नित्यानंद स्वामीने भगवान की महिमा को समझाया, एवं कहा कि जिस प्रकार भगवान की गद्दी को प्रणाम करने से सभी अंगो से प्रणाम किया हुआ माना जाता है । इसी प्रकार चरण स्पर्श का महत्व समझना चाहिए।

चर्चा के बीच में ही नवाब ने कहा, आप क्या पूछते हैं ? श्रीजी महाराजने कहा कि, ''आप के पुराणी का अभिप्राय यह है कि खुदा का कदम पाक है और सब अंगो में माया है । हमारा मन तो ऐसा है जैसे नारियल की मधुरता नारियल के साथ ही रहती है, उसे अलग नहीं किया जाता शकता । ठीक इसी प्रकार खुदा का सब अंग पाक (पवित्र) है । आप के ब्राह्मण की समझ ऐसी है कि परमेश्वर के चरण में ही माया नहीं है, बाकी सभी अंगो में माया है ।

वात सुनते ही नवाब ने कहा ब्राह्मण पढा अवश्य है लेकिन बेवकूफ है । खुदा में भी माया देखता है । इस वात पर ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा आप का पुराणी घोड़े के दांतो के भीतर की लगाम जैसी वात करते हैं । ब्रह्म मुनि की वात सुनकर सम्पूर्ण सभाजन हंस पडे । महाराज ने कहा, स्वामी ? आप तो एक ही वात में सम्पूर्ण सभा को खुश कर दिये । स्वामी की ऐसी ही आनन्द दायक एवं रहस्यात्मक वात होती थी । आनन्द युक्त वात सुनकर महाराज खुश-खुश हो जाते थे ।

अहमदाबाद (कालुपुर) मंदिर के नये महंत स्वामीकी नियुक्ति

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत पद पर पू. स.गु. महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी गुरु स.गु. स्वामी वामनप्रसाददासजी (इलाहाबाद-प्रयाग मंदिर के महंतश्री) की नियुक्ति की है ।

इ ही इमान

- गोरधनभाई सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

जो अनादि पुरुषोत्रम नारायण है, जो सभी कारणो के कारण है, जो सर्वोपरि है, वे ही पृथ्वी पर भरतखंड में स्वामिनारायण के नाम से प्रगट हुए । भगवान स्वामिनारायण इस पृथ्वी पर प्रगट होकर सभी को सुखिया किये, अन्तर्ध्यान के बाद भी अपने अक्षरधाम की प्राप्ति हेतु भागवत धर्म की स्थापना की, जो स्वामिनारायण सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ । यह सम्प्रदाय एक विशिष्ट सम्प्रदाय है, जिससे आकर्षित होकर आज भी नये-नये लोग कंठी धारण करके आश्रित हो रहे हैं । लेकिन कुछ लोग कंठी पहनने के बाद भी स्वामिनारायण भगवान के प्रति निश्चय भाव न हुआ हो तो थोडे दुःख आने के बाद कंठी निकाल देते हैं, और मंत्र-यंत्र वाले काले-लाल धागे को गले में पहन लेते हैं। कईबार तो ऐसा बहाना करते हैं कि कंठी टूट गयी, गड़ती है, फंसती है इत्यादि । कितनी बार तो बाबा लोग द्वेष के कारण मुमुक्षुओं को विपरीत उपदेश देकर कंठी को निकलवाने में सफल हो जाते हैं । जब कि मुमुक्षु जन कंठी पहनने के बाद "सत्संग का योग नहीं रखते, नियमित देव दर्शन नहीं करते, शास्त्र का वांचन नहीं करते, संत समागम नहीं करते, कथा वार्ता को नहीं सुनते, परिणाम स्वस्म निश्चय-पक्ष आश्रय टिक नहीं पाता जिससे शरणागति छूट जाती है ।

कितने लोग गले में कंठी रखते हैं, परंतु उन के भीतर स्वामिनारायण भगवान के प्रति यथार्थ निश्चय हुआ है या नहीं इसका पता उनके बेटे की लग्न पत्रिका को पढने से लग जाता है । इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण की कृपा से ..... इस की जगह पर हमारी कुल देवी ..... की असीम कृपा से यह आता है । जीव में शक्ति न आने के कारण ही कुलपरंपरा का लोप नहीं करपाता है । स्वामिनारायण भगवान तैतीस करोड़ देवताओं के ऊपर हैं । लग्न पत्रिका में जो स्वामिनारायण भगवान का नाम लिखा वह तैतीस करोड देवता का नाम लिख दिया । इस में कुल देवी का नाम भी आ गया । जो भगवान स्वामिनारायण को प्रसन्न किया उसने तैतीस करोड देवता को प्रसन्न किया ।

एक समय श्रीहरि भुज पधारे, उस समय सुंदरजीभाई तथा गंगाराम भल्ल, अदाभाई को साथ लेकर श्रीहरि के स्वागतार्थ सामने जाते हैं । इसी समय फतेह महेमद जमादार मिल जाता है। वह कहता है बडे उमंग में कहाँ जा रहे हो ? उन्होंने कहा कि हमारे गुरुजी आ रहे हैं, स्वागत के लिये जा रहे हैं । जमादार ने कहा राजा को भी स्वामिनारायण में भाव है वह सवारी लेकर सामने जायेंगे । ऐसा कहकर स्वयं राजा के पास जाकर वृत्तान्त बताया । राजाने खूब धूम धाम के साथ स्वागत की तैयारी किया। बाद में राजा महाराज के निवास स्थान पर जाकर कहा कि हमें आपके प्रति बहुत श्रद्धा है । आप को हम जगह देते हैं । आप वही पर मंदिर बनाइये । धर्म का प्रचार करिये, आप का धर्म श्रेष्ठ है . आपके संतो की नीति-रीति अच्छी है ।

राजा अपने महल में गया । बाद में श्रीहरि फतेहमहमद को बुलाकर पान का बीडा दिये । फतेहमहमद ने कहा आप समर्थ पुरुष है । आप का नियम भी अच्छा है । आप श्रेष्ठ धर्म चला रहे हैं । यही आपका श्रेष्ठ धर्म है । चवन जाती के लोग हिन्दू धर्म को नहीं मानते । हिन्दू जाति को हम बेईमान मानते हैं । नाना प्रकार के देवी-देवता को मनते हैं, एक साहब को नही मानते । हमलोग तो मात्र एक साहब को ही सुख-दुःख का कर्ता धर्ता मानते हैं । हम लोग एक ही इमान रखते हैं । आप के सत्संग में भी एक ही इमान है । इसलिये आपके धर्म को प्रमाण मानते है । श्रीहरि ने कहा हिन्दु हो या चवन हो साहब के बचन को सत्य मानकर विश्वास रखना चाहिए । साहब जीव के परम मित्र हैं - दूर कभी नहीं रहते ।

स्वामिनारायण भगवान हम सभी के साहब हैं । अपने इष्टदेव हैं । अपने सुख-दुःख को धर्मवंशी आचार्य को कहना चाहिये । अपने सुख-दुःख को अपने इष्टदेव को कहना चाहिए । अहमदाबाद-वडताल दोनो गादी के निष्ठावाले संत-हरिभक्त को कहना

चाहिए । अथवा शिक्षापत्री खोलकर वांच लेना चाहिए । शिक्षापत्री के अनुसार भूतादि उपद्रव हो तो नारायण कवच का पाठ करना चाहिए या हनुमानजी के मंत्र का जप करना चाहिये । इस से उपासना का भंग नहीं होता । बल्कि श्रीहरि प्रसन्न होते है । रोग हो तो शि.प. की मर्यादा में औषधि का उपयोग करना चाहिए । खराब स्वप्न आने पर स्वामिनारायण नाम लेने से सुस्वप्न हो जाता है । स्वामिनारायण नाम लेकर सोने से स्वप्न में श्रीहरि का दर्शन होगा ।

स्वामिनारायण भगवान जब रोगी भक्त को देखने जाते वह खाट में भी यदि कालाडोरा बांधे रहता तो दूर से देखकर वापस आ जाते थे । कहते कि हमारी आवश्यकता है या काले डोरे की । जो हरिभक्ति अपनी कमाई का दशवां या वीसवां हिस्सा नरनारायणदेव या लक्ष्मीनारायणदेव (देश विभाग के अनुसार) की आपिस में जमा कराते है उनकी रोग, शोक, चोरी, राज्यदंड इत्यादि से श्रीहरि रक्षा करते हैं। इस प्रकार दान करने वाले को कभी दरिद्रता नहीं आती है ।

अक्षर ब्रह्म, महापुरुष, महामाया, काल, प्रधान पुरुष, प्रकृति इत्यादि श्रीहरि की शक्तियां हैं। अक्षरधाम में रहकर श्रीहरि अपनी शक्तियों से ही उत्पत्ति, स्थिति लय एवं मोक्ष संबंधी लीला करते हैं। ब्रह्मा जब श्रीहरि के अनिरुद्ध स्वरुप की उपासना करते है तब उनके भीतर सृष्टि करने का सामर्थ्य आता है । विष्णु भगवान जब श्रीहरि के प्रद्युम्न स्वरुप की उपासना करते हैं तब सृष्टि के रक्षण का सामर्थ्य प्राप्त करते हैं । शिवजी जब श्रीहरि के संकर्षण स्वरुप की उपासना करते है, तब सृष्टि के प्रलय का सामर्थ्य प्राप्त करते हैं । अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति हमें मिले हैं, जिसके एक-एक रोम में हजारो ब्रह्मांड हैं । इनसे बडा कोई देवता नहीं है । ऐसे प्रभु की कंठी सदा धारण करना चाहिये, तिलक चंदन सदा करना चाहिये । किसी के मजाक करने पर कंठी तोडडालना या तिलक-चंदन को मिटा डालना उचित नहीं है । साम्प्रदायिक सूर-वीरता इसेनहीं कहेंगे ।

अहमदाबाद गादी के आचार्यश्री पुरुषोत्तमप्रसाददासजी महाराज का एक पार्षद मुक्त केसर भक्त था । वह श्रीजी की सर्वोपरि उपासना को प्रतिष्ठित करने में सदा लगा रहता था । इसका ध्यान करके अक्षराधिपति भगवान स्वामिनारायणने मुक्तो को भेंजकर केसर भक्त को सदेह अक्षरधाम में बुला लिया । वहाँ केशर भक्त को अक्षरधाम का दर्शन कराया गया । बाद में उसे कालुपुर मंदिर वापस भेंज दिया गया। श्रीहरिने उस भक्त के साथ एक चित्रपट भेंजा जो आज कालूपुर मंदिर में गणेश भगवान के दाहिनी तरफ प्रदक्षिणा करते समय सभी को दर्शन होता है । इसका दर्शन करके सभी को श्रीहरि के सर्वोपरि उपासना का रहस्य समझना चाहिये । मनुष्य देहधारी भगवान स्वामिनारायण ही अक्षराधिपति परब्रह्म हैं वे ही कारणों के कारण है । सर्व व्यापक है इसी वात को इस चित्रपट में समझाया गाया हैं । श्रीजी महाराज का अक्षरधाम गोलोक श्वेतद्वीप, बदरिकाश्रम इत्यादि से श्रेष्ठ है । इस वातको भी यहाँ समझाया गया है ।

इसलिये हमे ऐसे भगवान मिले है तो फतेह महमद की तरह एक ही इमान, एक ही निष्ठा एवं एक ही उपासना रखनी चाहिये । शरणागति की कंठी गले में से निकालने के बाद श्रीहरि की कोई जवाबदारी रहती नहीं है ।

यहाँ किसी देव के खंडन की बात करने का हेतु नहीं है । शिव, पार्वती, गणपति, सूर्यनारायण एवं विष्णु इन पांच देवों को आदर पूर्वक मानना एवं रास्ते में जाते समय शिवालयादि देव मंदिर आवें तो आदरपूर्वक नमस्कार करना । यह वात शिक्षापत्री में निर्दिष्ट है । परंतु नित्य दर्शन, ध्यान, पूजन, भजन, निष्ठा, इत्यादि इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान में रखकर एक ही इमान रखने से जीवन के कल्याण को कोई रोक शकता नहीं है । जीव खूब मजबूत हो जाता है ।

मूली मंदिर के नये महंत स्वामीकी नियुक्ति

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने राधाकृष्णदेव देश के श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत पद पर स.गु.शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी (हरिद्वार मंदिर के महंतश्री) की नियुक्ति की है ।



मुली मंदिर के कविश्री देवानंद स्वामी

- साधु भक्तवत्सलदास (तपोवन मंदिर, लीमडी)

सन् १८०८ एवं विक्रम स. १८६५ ठन्डी का समय था । संध्या समय ठल रहा था । जेतलपुर में अहिंसामय यज्ञ कराकर स्वामिनारायण भगवान भाल प्रदेश के बडोल गाँव में पधारे थे । २८ वर्ष के नवयुवान भगवान स्वामिनारायण की ख्याति गाँव-गाँव में आश्चर्य का पर्वत स्थापित कर रही है । इसीलिए समग्र गाँव उनके दर्शन हेतु एकत्रित हुआ था । प्रभु के प्रेमी भक्त रैया खटाण ने प्रभु से आग्रह किया कि महाराज भोजन करके यहाँ रातभर रुक जाइए । हमें यह लाभ प्रदान कीजिये । परंतु प्रभु को जाने की शीघ्रता थी । इसीलिए उनकी मरजी समझ कर रैया खाणने तसलाभर कर दूध अर्पण किया। घर में बैठकर भोजन करने के बदले लोगों की भीड के बीच में ही, बैलगाडी पर बैठे-बैठे श्रीहरि के भोजन करने की रीत भी अमानुषी थी । अंजली भर कर मुंह से दूध पी रहे थे और बांहो से होता हुआ दूध बंहोरी को भिगोता हुआ नीचे गिर रहा था । गाडी के नीचे पैर लटकाकर बैठे थे, अमानुषीय इस दृश्य को देखने के लिये भीड़ इकठ्ठा हो गयी । सभी कहने लगे ऐसे कोई भगवान होते हैं ?

परंतु इस लीला को देखकर एक बालक अपने अन्तर में उतार रहा था । महाराज कब भोजन पूरा कर लिये, उसें पता नहीं चला, वह समाधि की स्थिति में हो गया था । इधर महाराज भोजन पूर्ण करके अपनी घोडी पर बैठकर चलने को तैयार हुए, तब तक उस बालक की अन्तर्मुखी दृष्टि खुली और वह भीड़ के बीच से चिल्लाते हुए स्वामिनारायण भगवान के पास पहुंच गया, और कहने लगा -

महाराज हमें साथ ले चलिये न, हमें आपके साथ आना है । लेकिन आप कहाँ रहते है ? आप का नाम क्या है ? महाराज मैं चारण जाति का हूँ, जीजीभाई रत्नुका बेटा हूँ, मूली में मेरा ननिहास है । मेरा नाम देवीदान गढवी है ।

महाराज उसकी भावना को समझ गये । उसकी विन्ती स्वीकार ली । सभी परिवार को समझाकर महाराज देवीदान को अपने साथ लेलिये । अपने प्यारे सखा ब्रह्मानंद स्वामी को सौंप दिये । यह भी देवीपुत्र है, अब इसे तैयार करें ।

महाकवि ब्रह्मानंद स्वामी ने श्रीहरि की आज्ञा को मस्तक पर चढा लिया । देवीदान के हृदय में जो प्रकाश था उसे बाहर निकाला । पींगल शास्त्र में देवीदान निपुण होने लगे । राग-रागिनी का पूर्ण ज्ञान होने लगा । थोडे ही समय में श्रीहरि ने उन्हें दीक्षा दे दी । अब वे देवीदान में से देवानन्द स्वामी बन गये । इतना ही नहीं महाराज की आज्ञा से ब्रह्मानंद स्वामी के साथ मूली मंदिर का निर्माण कार्य करवाये एवं वहीं स्थायी हो गये ।

देवानंद स्वामी अपनी काव्य आराधना में सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण को ध्यान में रखकर एक-एक करके कविता की रचना करने लगे । इनकी कविता में भक्तिभाव के साथ वैराग्य का आधिक्य रहा है । इनकी कवितायें प्रायः प्रेमलक्षणा भक्ति की परिचायिका हैं ।

"माणस नो अवतार मोघो नहीं मले फरी,
के तारा मांथे नगारा वागे मौतना रे...
आवुं तारु धन रे जोबन धूल थाशे....

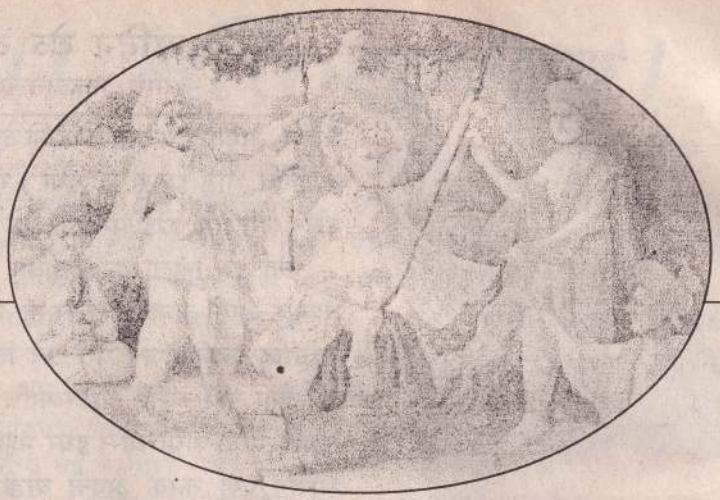
ऐसे पदो में कितनाभाव गाम्भीर्य है । ऐसी अजोड़ पदो की रचना इनकी मिलती है ।

भगवान स्वामिनारायण को प्रसन्न करने के लिये काव्य रचना के साथ संगीत की साधना भी निराली थी । इतना ही नहीं कुशल व्यवस्थापक भी थे, जिसके परिणामस्वरूप मूली मंदिर के २२ वर्ष तक महंत बने रहे । अपनी सेवा से महाराज को प्रसन्न करते रहे । कवीश्वर दानालाल लिखते है - देवानंद स्वामी जैसे महान संत कवि मूली में हुए हैं । सितार बादन भी अलौकिक

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १०

अपने संप्रदाय में झूलोत्सव की परम्परा

- साधु घनश्यामप्रकाशदास - जमीयतपुरा
(महंत स्वामी - माणसा)



समग्र भारत भूमि का सौन्दर्य काश्मीर प्रदेश, फूल की बहार से खिल उठता है। एक समय पर्यटन करने के लिये कोई कविराज पहल गाँव पहुंचे वहाँ का सौन्दर्य देखकर उनके हृदय में से कविता कामिनी निकल पडी। पृथ्वी ऊपर कहीं यदि स्वर्ग है तो यहीं है - यहीं है यहीं है। बगल से निकलते समय एक काठियावाडी ने यह सुना तो कहने लगा लगता है झूले पर झूलने की मजा इसने नहीं लिया। स्वर्ग को शरमाने वाला सुखदाई झूले का झूलना होता है, इसी लिये तो श्रीहरि को पालने में बैठाकर झुलाया जाता है।

सम्पूर्ण वर्ष में एक महीने श्रावण मास में भक्तों के हृदय में भक्ति उमड़ पड़ती है। प्रभु को प्रसन्न करने के लिये नाना प्रकार से पूजन-अर्चन व्रत, दान, तप, दक्षिणा, कथा, कीर्तन, पारायण इत्यादि से सारावातावरण भावनापूर्ण सुगंध से महक उठता है। इस में भी जब श्रीहरि को झूले में झुलाने की बात आती है तो भक्तों के हृदय स्वयं झूम उठते हैं। गाँव के बाहर वट वृक्ष की या पीपल की डाली पर झूला डालकर गोप-गोपियां श्रीकृष्ण परमात्मा को झूले पर झुलाती तब मानों आकाश एवं धरती आनंद में विभोर होकर प्रभुके चरणों का स्पर्श करने के लिये स्वयं झूम रही हों। जब प्रभु झूले पर बैठ जाते तब सारे गाँव के नर-नारी अपने कार्य को छोड़कर झुलाने के लिए दौड आती। कोई दही मथना छोड कर, कोई तवाकी रोटी छोडकर, कोई गोबर के हाथों वाली ही वहाँ अपने प्रभु के प्रेम में पागल बनी पहुँच आती और झूले में झुलाती। नवधा भक्ति की यह अलग भावना को अभिव्यक्त करने की एक रीति है। यह परंपरा गाँवों से प्रारम्भ होकर प्रभु के मंदिरो तक पहुंच गयी। पहले तो वृक्षों की डाली मे झूले बांधे जाते बाद में आज तो नाना विध कलाकृति से अलंकृत करके झूले में प्रभु को झुलाया जाता है। कोई चांदी के झूले में तो कोई सोने के झूले में प्रभु को झुलाते है। इतना ही नहीं अद्यतन इलेक्ट्रिक युग में तो क्या कहना। समाज की उन्नति के साथ-साथ भक्तों की मानसिकता सूझ-बूझ, अभिव्यक्ति, एवं सुविधाओं की कल्पना नहीं की जा सकती इतना परिवर्तन आया है। अपनी शक्ति के अनुसार सभी झूले को अलंकृत करके प्रभुको झुलाते है। एक महीने का यह नयन रम्य वातावरण वर्षान्त तक स्मृतिपटल से अलग हो ही नहीं पाता।

सर्वोपरि भगवान स्वामिनारायण ने तो भाव भक्ति का अलग स्वरूप दिया है। प्रत्येक उत्सव को अपना अलग स्वरूप दिया है। तीर्थधाम जेतलपुर का बगीचा हो या सारंगपुर में राठोड धाधल का दरबार हो या पंचाला के झीणाभाई का दरबार हो, श्रीहरि जहाँ पधारते वहाँएक तरफ कथा होती तो दूसरी तरफ श्रीहरि झूले पर झूलते और रंगो के गुलाल से सारे वातावरण को गुलाबी बना देते। गढपुर दादा खाचर के दरबार की दालान में झूला डालकर श्रीहरि को झुलाया गया कि आज तक वह स्मरण खत्म ही नहीं हुआ। इस झूले के आनंद को देखकर स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने इतना अद्‌भुत झूला बनाया कि स्वयं श्रीहरि देखकर अचम्भे में पड गये। संत-हरिभक्तों के भीतर की भक्ति देखकर आज श्रीहरि ने एक कौतुक किया। बारह झूले निष्कुलानंद ने बनाया सभी झूलों पर प्रभु १२ स्वरूप धारण करके झूलते हुए सभी को दर्शन दिये। जयघोष की बुलन्द आवाज के साथ कोई गुलाल, कोई पुष्प, कोई रंग भरी पिचकारी से प्रभु को आनंदित करने लगा प्रभु की

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १०

महाराजने मंत्रसिद्ध मगनीराम का मानस परिवर्तन किया

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

ब्राह्मण कुटुम्ब में जन्म लेने वाला बालक सभी से पूछे "आप भगवान को देखे हैं ?"

एक महात्माने कहा "तूं अपने इष्टदेव की भक्ति कर तुझे अवश्य भगवान मिलेंगे ।"

मगनीराम भक्तिमार्ग पर चलने लगे तथा शास्त्रो का एवं पुराणों का तलस्पर्शी अध्ययन किये ।

द्रविण देश का एक मंत्र सिद्ध पंडित - युवान मगनीराम के संपर्क में आया । वह प्रतिभाशाली मगनीराम के साथ अपनी पुत्री का विवाह करने का मनही मन विचार किया ।

पंडित ने कहा : मंगनीराम ! मैने मंत्र सिद्ध किया है। यदि देवी की कृपा तुम्हारे ऊपर हो जायेगी तो बेडा पार हो जायेगा ।

मगनीराम ने ऐसा अर्थघटन किया कि देवी की कृपा से अवश्य भगवान का दर्शन होगा ।

मंत्र सिद्ध महात्मा को गुरु मानकर मगनीराम मंत्र साधना आरम्भ कर दिया । समय बीतते सिद्धिदात्री देवी प्रसन्न होकर उसके ऊपर रिध्धि-सिध्धि की वर्षा करने लगीं । इस मंत्र की साधना में तथा लक्ष्मी की लालसा में मगनीराम लक्ष्मीपति को भूल गया ।

तीन वर्ष के बाद महान मंत्र साधक होकर जब मगनी राम गुरु से जाने की आज्ञा मांगी तो, गुरुने कहा मगनीराम ! मेरी गुरु दक्षिणा देकर जा ।

गुरुवर्य ! आप को जो चाहिये मांग लीजिये ।

मेरी इस पुत्री के साथ विवाह कर ।

"गुरुवर्य ! गुरुपुत्री तो मेरी बहन है ।"

अंत में गुरु का आश्रम छोडकर जगन्नाथ पुरी, काशी, हरिद्वार इत्यादि स्थलों की यात्रा के लिये निकल पड़े । तमाशे के लिये बुलाने की जरूरत नहीं होती । भारतवासी इनकी सिद्धियों से प्रभावित हो गये । इनके शिष्य वृन्द में अभिवृद्धि होने लगी । राजा लोग भी मगनीराम की मदद लेने लगे । इस प्रकार मगनीराम खूब धनोपार्जन किया। सभी उसे मंत्र साधक देवी वाला मगनीराम कहने लगे ।

करीब २५० वर्ष पूर्व द्वारका में महल जैसा मंठ बनवाया था । मगनीराम छप्पन प्रकार का भोजन करता । जब इसकी सवारी निकलती थी तब आगे-आगे ऊँट पर लहराती पताका होती, पीछे से मगनीराम की पालकी चलती थी । उस समय चार घोड़सवार आगे, चार पीछे शस्त्रधारण करके चलते थे । देवीवाला मगनीराम की जय हो ?

मंत्र सिद्ध मगनीराम की जय हो ?

सवारी आ रही है यह सुनते ही मानवमेदनी भर जाती थी । वह हवा में एक फूंक मारता कि आग की ज्वाला निकलने लगती थी । बडे धनी लोग उनसे डरकर चरण में हजारों रुपये रखदेते थे ।

मगनीराम घूमते-घूमते सवारी पर सवार होकर पोरबन्दर पहुंच गया । वहाँ अपने पांच हजार रुपये गोंसाईजी के पास से मांगा । मंत्रसिद्धि के बल से उसे बेहोश कर दिया। गोंसाईजी जब होश में आया तब कहा - मगनीराम ! मारना है तो मीर को मार, मांगरोल जाकर मणिधर को वश में करले तो तुम्हे मगनीराम समझूं ।

कौन मणिधर ? "सहज आनंद का सन्देशक श्री सहजानंद स्वामी जो भगवान स्वामिनारायण की तरह पूजा जाता है । एवं पूजनीय मानता है ।" मगनीराम अपने चेलो के साथ नवाब के पास पहुँच गया । वहाँ अपनी सिद्धिओं का प्रदर्शन करने लगा । आग मुख से निकालना, आकाश में जाना, जमीनमें जाना, इत्यादि नवाब देखकर आश्चर्यचकित हो गया।

"मगनीराम ने कहा नवाब १० हजार रुपये दो ।" तब नवाबने कहा हम तुम्हे २० हजार देगें यदि तुम अपनी सिद्धि का प्रयोग स्वामिनारायण के सामने करके दिखाओं तो । वह चुटकी बजातेहुए महाराज के पास गया वहाँ महाराज सभा में विराजमान थे । उस सभा में उच्च आसन पर एवं दिव्य तेज पुंज देखकर हृदय में थोड़ा भाव जगा, फिर भी थोडी देर के बाद बुलंद आवाज में कहनेलगा, यह पाखंड करना बन्द करदो । इसके अलावां कोई सिद्धि आप के पास है क्या ? महाराज हंसते हुए कहे कि, हमारे पास सिद्धि कहाँ से होगी । हम तो कथा प्रवचन एवं उपदेश करने वाले हैं । १० हजार रुपये देते हो या हम उलटा-पलटा करे ।

हमारे जैसे त्यागी के पास कहाँ से आयेगा ? भूख लगी हो तो मंदिर में सदाव्रत-चलता है । उसमें जाकर आप सभी भोजन कर लो ।

मंत्रसिद्धि मगनीराम देवी वाला देवी की उपासना के लिये आराधना करने चला गया, क्योंकि स्वामिनारायण के सामने आग प्रगट नहीं कर सका । माँ ? स्वामिनारायण सभा में हमारा अपमान किया है, उब हमेंउसे नीचा दिखाने के लिये शक्ति दो ।

मगनीराम ! तूं मेरा सेवक है, ऐसे ही हम भी किसी की सेविका है ।

अरे ! आप किसकी सेविका हैं ?

भगवान स्वामिनारायण की अनेकों सेविकायें है उसी में हम भी एक हैं । भगवान का नाम सुनते ही मगनीराम के हृदय में परिवर्तन हो गया। किशोरावस्था से ही भगवान के दर्शनार्थ निकल पडा था । वह भगवान की शरण में आकर कहा मैं अब आपकी शरण में हूँ, मुझे आप दीक्षा दो । महाराज के कहने से मगनीरामने जटा उतारकर मुंडन करवाया, उसका अहंकार जाता रहा । महाराजने उसे अपना कर नीति-नियम का उपदेश करके, दीक्षा देकर अद्वैतानंद नाम रखा । मगनीराम के शिष्य भी वहीं पर दीक्षा लेकर शरणागत हो गये ।

पृष्ठ ७ से आगे.....

मुली मंदिर के कविश्री देवानंद स्वामी

था । एकबार धांगध्रा के राजा साहब भी देवानंद स्वामी का सितार बादन सुनने के लिये मूली पधारे थे ।

देवानंद स्वमी ने संप्रदाय को एक अमोल सम्पत्ति भेंट में दी है, अर्थात् गुजरात के कविरत्न दलपतराम न्हानालाल कवि अपने पिता दलपतराम की दीक्षा का उल्लेख करते हुए लिखते है कि -

हमारे पिताजी देवानंद स्वामी की कविताओं को सुनकर उन्हीं के दीवाने हो गये थे ।

ब्रह्मानंद स्वामी अब अक्षरधाम चले गये तो मूली मंदिर का महंत पद खाली हो गया । झालावाड के लोग तत्कालीन आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री से आकर कहे कि देवानंद स्वामी के गुरुब्रह्मानंद स्वामी जो कार्य छोडकर गये है वह अपूर्ण कार्य देवानंद स्वामी कर शकते है, अत: हम सभी आप से यही निवेदन करने आये है, यह सुनकर महाराज ने देवानंद स्वामी को मूली मंदिर का महंत पद दे दिया, वे गुरु का अवशेष कार्य पूर्ण किये ।

वि.स. १९१० श्रावण कृष्ण नवमी के दिन देवानंद स्वामी ने एक मेराई भक्त को कहा कल हमें अक्षरधाम में जाना है, इसलिये मेरे मरने की पालकी तैयार की जाय । मेराई को बडा आश्चर्य हुआ कि स्वामी तो अभी पूर्णस्वस्थ है, स्वामी ! आप को कोई रोग तो है नहीं फिर धाम में जाने की बात ? यह कैसे माना जाय ?

स्वामीने कहा तुम्हारे घर के सामने जब पांच कुमकुम का चरण चिन्ह पडा हो तो मान लेना ! हुआ भी ऐसा । दूसरे दिन निश्चित समय पर मूली मंदिर के महंत देवानंद स्वामी की शरीर पंचमहाभूत में विलीन हो गयी और शेष रहा तो उनका काव्य एवं स्वामी की सेवा का सुवास ।

पृष्ठ ८ से आगे.....

अपने संप्रदाय में झूलोत्सव की परम्परा

मंद मुस्कान देखकर संत वृंद भी नाच उठा । देखते-देखते संगीत का सूर सारे वातावरण को आनन्दित करने लगा ।

- बार-बार बारणाना हिंडोले झूलता : करी निष्कुलानंद कमाल । हिंडोले हरिझुलता रे

- आव्यो श्रावण मास अनुप हिंडोलो माच्यो रे, जोई राजी थयो महेश तांडब नाच्यो रे.....।

- हिंडोल नामे होरे होरे झूलो महाराज । पेल झुलाउं रत्न हिंडोले सुफल करुं सवकाज हिंडोल नामे होरे.....।

इस प्रकार क्रमश: एक-एक करके गीतों की झडी लग गयी ।

भगवान का झूलता हुआ झूला जब नजदीक आता तब आत्यंतिक सुख की अनुभूति होने लगती । जब झूला दूर जाता तब जैसे भगवान से दूर होने के कारण अग्नि के ताप का अनुभव होने लगता । इस प्रकार हीर का हिंडोला जब भक्त अपने हाथ में पकड़कर श्रीहरि को झूलाता है तो भक्ति के साथ ज्ञान का समन्वय होने से चिर:स्मरणीय सुखदायक संजीवनी बन जाती है ।

सत्संगी की रोटी

- पटेल गांडाभाई मोहनद्वाल (कोल्हापुर)

गाँव कांकरिया का भरवाड पांचो एवं वालो द्वारका की यात्रा पर गये थे। रणछोडराय का दर्शन करके स.गु. सच्चिदानन्द स्वामी का दर्शन करने गये। दोनो ने उनसे पूछा आपकिस के साधु हैं.?

स्वामीने कहा कि हम स्वामिनारायण के साधु हैं। हमें रणछोडने दर्शन दिया है और कहा है कि हम आपके साथ बडताल आयेंगे, वहीं निवास करेंगे। इस प्रकार बहुत सारी बाते स्वामीने की। वे दोनो स्वामी से प्रभावित हो गये और स्वामी से कंठी धारण करके सत्संगी हो गये। उन दोनो को हुआ कि जैसा शास्त्रों में संत का लक्षण बताया गया है वैसा स्वामी में है अतः हम इनका दर्शन करके धन्य हो गये। उसी समय से वे दोनो स्वामिनारायण के भक्त हो गये।

एकवार दरबार हकोभाई, खांभा के दरबार जेठा भाई बडाली के दरबार मधो भाई तथा पाडासण के दरबार सुलतानजी एक जगह बैठकर गप्पा मार रहे थे, उसी समय सत्संगी वालो वहाँ आ गया, उन सभी के साथ बैठकर कुछ बाते करने लगा। उस में से किसी ने कहा अरे वालो ! तूं तो स्वामिनारायण का हो गया है ? यह सुनकर वालो ने कहा हाँ दरबार ? श्री स्वामिनारायण तो साक्षात् भगवान है। उनके साधु शास्त्र के अनुसार वर्तन करते हैं एवं लोगों से कराते हैं। पाप कर्म छोडवाते हैं हिंसा बन्द करवाते हैं। आप लोग भी जीव हिंसा छोड़कर भगवान की शरण लेलो। इसी में सभी का कल्याण है।

इस प्रकार वालो की भावात्मक वात सुनकर सभी दरबारों के मन में श्रद्धा के भाव जगे। सभी कहने लगे वालो आपके स्वामिनारायण इस समय कहाँ है, उसने कहा, इस समय गढडा में है, एकबार दर्शन की इच्छा हो रही है ? चारो दरबार दर्शन की लालसा से घर से निकल तो दिये यह विचार करके कि जब स्वामिनारायण मिलें तो सभी का नाम एवं गाँव को स्वयं बतावे, एवं प्रेम से भोजन करावे, बैठावे तो ही हम उनके सत्संगी बनेंगे। उन्हें भगवान मानेंगे। घोड़े पर सवार होकर गढड़ा एभलखाचर के दरबार में पहुंच गये एवं पूछे "आपके स्वामिनारायण कहाँ है ?" एभलखाचर ने कहा वे दोदिन से कारियाणी हैं। आप लोग बैठिये जलपान करिये। बाद में साथ बैठकर भोजन किये।

थोड़ा आराम करने के बाद चारो दरबार एभलखाचर से पूछकर कारियाणी के लिये निकल गये। कारियाणी में मांचाखचर के दरबार में पहुँचकर श्रीजी महाराज को पूछा, मांचाखचर ने कहा वे तो धोलेरा के लिए निकल गये हैं। आप सभी बैठिये, आराम कीजिये, भोजन कीजिये, ऐसा सुस्वागत करके, भगवान स्वामिनारयण की महिमा को बताया। वे तो अक्षरधाम के वासी है, जगत का कल्याण करने के लिये अवरित है। चारो दरबार वहीं रात्रि निवास करके प्रातः धोलेरा के लिये प्रस्थान किये, वहाँ पूंजाजी दरबार के यहाँ पहुँचकर पूछे कि "स्वामिनारायण कहाँ रुके हैं ? पूंजाजी ने कहा महाराज तो कल जेतलपुर चले गये। अब आप लोग यहाँ महाराज से मिलने आये हैं तो आप सभीका स्वागत किये विना हम जानेनहीं देगे। दो दिन वहाँ रोका स्वागत किया। बाद में चारो जन जेतलपुर के लिये चल दिये, जेतलपुर गंगामां के यहाँ पहुंचकर कहें कि स्वामिनारायण कहाँ है ? गंगा मां ने कहा कि महाराज प्रातः अहमदाबाद चले गये। गंगा मां ने भी उन सभी को रोक लिया और रोटी बनाकर खिलाई। भगवान की महिमा की बहुत सारी वांते की। सभी निरमल मन के होकर वहाँ से प्रस्थान किये। चारो दरबार अलग-अलग जगहों पर रोटी खाकर एवं स्वागत प्राप्त कर भगवान की महिमा सुनकर श्रीजी को आत्मसात कर लिये थे। चारो जन अहमदाबाद जहाँ महाराज तंबू डालकर विराजमान थे ऐसे कांकरिया तालाब पहुँच गये। वहाँ सभी संत हरिभक्त कथा के रस में डूबे हुए थे। दूर परघोडे से उत्तर कर तंबू में आये, वहाँ श्रीजी महाराज को वंदन किये, एवं उनके गाँव के साथ नाम को बडे प्रेम के साथ लेकर बैठाये और कहे कि आप सभी हमारे दर्शन के लियए काफी परेशान हुए। हमारे सत्संगियों की रोटी खाये। कुसंग छोडे। हमारी महिमा सुनकर आप लोग निर्मल मन के हो गये हैं। अब आपलोग हमारे हो गये हैं। चारो जन श्रीजी महाराज के चरणों में गिर गये एवं कहने लगे अब हमें अपनीशरण में ही रखिये। श्रीजी महाराजने उन्हें अपना लिया, प्रेम से भोजन कराया। आज भी उनके कुटुम्बी परम्पार के सत्संगी हैं।

"श्रीजी ने गोततां गोततां खाधां
सत्संगीनां रोटला।
श्रीजीनां दर्शन थतां वेंत छूट्यां
कुसंगना पोटला॥"

I.S.S.O. का इतिहास

- प्रहलादभाई वी. पटेल (करजीसणवाला - न्यूजर्सी)

अमेरिका की धरती पर श्री स्वामिनारायण भगवान ने जिस मूल संप्रदाय की स्थापना की थी, उस मूल संप्रदाय का धर्मध्वज यदि किसी ने लहराया तो वे हैं अपने प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. धर्मरक्षक १००८ श्री तजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री । भगवान स्वामिनारायण का नाम पत्ते-पत्ते पर लिखा जायेगा, यह बात विदेश की धरती यु.के., आफ्रिका, ओस्ट्रेलीया, अमेरिका इत्यादि देशों में दिखाई दे रही है । प.पू. महाराजश्री विदेश की धरती पर सर्व प्रथम अमेरिका पधारे थे, जिन्होंने एक छोटा सा मंदिर बनवाकर सत्संग की स्थापना की थी । प्रत्येक कार्य के पीछे अथक परीश्रम, निःस्वार्थ भावना, त्याग, कुशलप्रतिभा होनी चाहिए, ये सभी निवृत्त पू. आचार्य महाराजश्री में थी।

धर्म धर्म सौ कहे धर्ममां बहु मर्म छे ।
धर्म सुतना वचन, एज साचो धर्म छे ॥

प्रत्येक कार्य के आरम्भ की यशोगाथा किसी महान व्यक्ति को ही मिलती है । भगवान की कृपा से ही यह सम्भव है । जिंदगी में किसी महापुरुष की सेवा का योग मिले तो चूकना नहीं चाहिए । अमेरिका की विशाल भूमि पर श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का मूलभूत सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिये प.पू. बडे महाराजश्रीकी अमिट दृष्टि किस पर पडी ? यह महान कार्य किसने किया ? आप भी ऐसे महान कार्य में निमित बनना ।

I.S.S.O. के इतिहास को निमित्त बनाने वाला एक श्री नरनारायणदेव के चरण कमल में पुत्र के जन्मदिन के उपलक्ष्य में खुशहाली हेतु छोटी सी भेंट का चेक । अमेरिका से प.पू.ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की प्रसन्नता तथा आशीर्वाद प्राप्ति के लिये भेंजे गये पत्र का पता ।

मेरा गाँव है दंढाव्य देशमें सर्वोत्तम प्रमादी का तीर्थधाम करजीसण । जहाँ पर श्री स्वामिनारायण भगवान ३६ बार पधारकर जन्माष्टमी का उत्सव किये थे । मेरा नाम है प्रहलादभाई विठ्ठलदास पटेल, श्रीजी महाराज की कृपा से अमेरिका में हमारे घर १४ सितम्बर १९७७ को प्रथम पुत्र का जन्म हुआ । जन्मदिन के निमित्त भगवान नरनारायणदेव को भेंट के रुप में २५०० का डोलर चेक श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के लिये भेंजा । जिस कवर में भेजा था उस कवर का ऐड्रेस प.पू.ध.धु. १००८ श्री बडे आचार्य महाराजश्री अपने पास रख लिये और मनमें संकल्प किये अमेरिका आने का ।

प.पू. बडे महाराजश्री ने लौटती डाँक से आशीर्वाद पत्र भेंजा, जिस में लिखा कि "आपके पत्र में श्री नरनारायणदेव का आश्रित लिखा हैं" तो हम श्री नरनारायणधेव गादी के आचार्य है, हम धर्मप्रचारार्थ अमेरिका आना चाहते हैं, तो आप वहाँ हमारी क्या मदद कर शकते हैं ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद पत्र वांचकर हमें खूब आनंद हुआ । आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से किसे आनंद नहीं होगा ।

परंतु पत्र में सेवा शब्द का उल्लेख किया गया ता । जो हमारे जैसे सामान्य व्यक्ति के लिये कठिन था । उसमें भी अभी हम दो वर्ष पूर्व गये थे और भाड़े के मकान में रहते थे । जब भारत में थे तो पूज्य महाराजश्री का १०० फूट दूर से दर्शन करने का अवसर मिला था । बहुत धनी नहीं थे, किसान के बेटे थे । कोई बडी पहचान भी नहीं थी । जलझीलणी एकादशी के उत्सव में मां के साथ आने का टिकट लेकर कालूपुर स्टेशन से पैदल चल कर हाथी के हौदेपर विराजमान पू. आचार्य महाराजश्री का मंदिर के प्रांगण में दर्शन हुआ था, जिसका आनंद आज तक विद्यमान रहा । इतने बडे गादीपति को हम अपने घर बुलावें हमारे ताकत के बाहर की बात थी । फिर भी भगवान स्वामिनारायण की याद करके मन ही मन निश्चित किया कि सहयोग मांगने वाला कौन है ? पू. महाराजश्री का संकल्प अर्थात् भगवान का संकल्प । बलीराजा के यहाँ भगवान विष्णु बामन रुप धारण करके आये उस समय गुरु से राजा बलि ने कहा आज मांगने वाले प्रत्यक्ष परमात्मा है, मेरे भाग्य का उदय हो गया । सम्पूर्ण

जीवन भगवान के मंदिर में जाकर भगवान की भक्ति की थी उसी का यह फल है । उसी समय मैंने उत्तर लिखा कि पू. महाराजश्री आप अमेरिका अवश्य पधारें । हमारे पास ग्रीनकार्ड है । इसलिए हम आप की तथा संतो के लिये स्पोन्सरशीप भेंजेगे । आप अवश्य अमेरिका पधार कर हमें कृतार्थ करें । लेकिन एक छोटा सा निवेदन यह कि जहाँ हम रहते हैं वह मकान भाड़े का है उस में भी एक ही बेड़ रूम एवं लिविंग रूम है, फिर भी इसी में यथा सम्भव प्रयाश करेंगे । दूसरी विन्ती यह कि हमारा यहाँ कोई विशेष परिचत नहीं है, इस लिये आप के परिचय में यदि अन्य कोई हो तो आप उनका पता एवं नाम भेंजेगे तो सरलता रहेगी ।

अहमदाबाद से प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्री ने ऊँझा के रहनेवाले श्री रमणभाई पटेल तथा सहजानदं कोलेज के प्रोफेसर प्रबोधभाई शाह का नाम एवं पता, टेलीफोन इत्यादि भेंजा । दोनो के साथ बात करके प्रोग्राम निश्चित किया गया । प्रथमवार दो संतो के साथ पूज्य बडे महाराजश्री सहजानंद कोलेज के प्रीसीपाल श्री.एल. शात्री को भी लेकर गये । दूसरी बार संत एवं महाराजश्री पधारे थे ।

अमेरिका में १९७८ की प्रथम यात्रा में आचार्य महाराजश्री वहाँ पर रहने वाले कुछेक सत्संगियों के घर पदार्पण किये, २८००० मील तक दूरी पर रहने वाले भक्तों के यहाँ कार से कष्ट साध्य मुसाफिरी की थी ।

अमेरिका में I.S.S.O. का शुभारंभ हुआ एवं १९७८ को विजयादशमी के दिन प.पू. लालजी महाराजश्री वर्तमान पीठाधिपति के जन्म दिन पर श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान के I.S.S.O. संस्था का निर्माण अमेरिका में हुआ ।

परिणाम स्वरूप आज श्री नरनारायणदेव गादी संस्थान का ऐडिसन में तीन मंदिर (विहोकन, कोलोनिया, चेरीहील) बोस्टन टेम्पा, फ्लोरिडा, ह्युस्टन, शिकागो, लोस एजन्लस, डिट्रोइट इस तरह कुल ९ मंदिरो में श्रीहरि विराजमान हैं । एकाध वर्ष बाद पारसीपनी, कलिवलेन्ड एवं सानहोजे इस तरह तीन मंदिर और निर्माण होनेवाले हैं ।

प.पू. बडे महाराजश्रीने जिन वृक्षों को लगाया आज उन्हें वर्तमान पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने युवानो में प्रेरणा देकर फलाफुला किया है । आज वह विशाल बट वृक्ष हो गया है । प.पू.ध.धु. वर्तमान पीठाधिपति नव युवानों को सतत प्रेरणा देकर I.S.S.O. को अग्रसारित कर रहे हैं । जिसमें I.S.S.O. द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चल रही "सेवा" संस्था सामाजिक प्रवृत्ति में खूब आगे है ।

दीठा घनश्याम

घनश्याम वहेले रो पधारजो, एतो मारा आत्माना आधार हो राज.... घन...
सदा रंग महोले दीठा शोभता रे, प्रत्यक्ष नरनारायणदेव ने दरबार हो राज.... घन...
मूर्ति माधुरी अति शोभती रे, एवुं रूप जगमां न दीठुं क्यांय हो राज.... घन...
जोई मुखनी लावण्यता अति धरी रे, एतो जाणे उभा व्हालो साक्षात् हो राज.... घन...
एवी मूर्ति नहीं आ ब्रह्मांडमां रे, ए तो वालो साक्षात् स्वामिनारायण आप हो राज.... घन...
जोयुं रूप तारुं रणियामणुं रे, प्रहलादना हृदये वसजो सदाय हो राज.... घन...

-प्रहलादभाई वी. पटेल (न्युजर्सी - करजीसणवाला)

धार्मिक परीक्षा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पूज्य महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग द्वारा लीजाने वाली परीक्षा ता. २३-१२-०७ रविवार को प्रातः९ से १२ तक प्रत्येक केन्द्रो पर ली जायेगी । प्रत्येक केन्द्र संचालक अपने केन्द्र के परीक्षार्थियों की नामावली शीघ्रातिशीघ्र कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में भेंज दे ।

: पता :

संचालकश्री, श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग (सभा मंडप)
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-३८०००१.
समय : ९-०० से १०-०० (प्रातः)

सत्संग सुरभि :

"संसार थुं सरसो रहे पण मन मारी पास"

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

बंधिया गाँव में डोसाभाई वणिक रहते थे । गुण का बडा व्यापार था । गाँव-गाँव से गाडी भरकर गुण आता, गाडियों की लंबी कतार लग जाती थी । डोसाभाई गुणके व्यापारका एक एक हिसाब रखते कितना आया, कहाँ से आया, कौन लाया, यह सब करते हुए कभी कभी रात बीत जाती थी ।

डोसाभाई का इतना बडा व्यापार था फिर भी महाराजकी मूर्ति को हर समय हृदय में रखते थे । महाराज के प्रिय सत्संगी थे । महाराजमय ही उनका जीवन था । उपासना करके शरीर को कृष कर दिये थे । सब व्यापारी कहते डोसाभाई महाराज को दिखाने के लिये काम करते है, ये तो अपना सारा समय व्यापार में लगाते हैं । इन्हें धंधा प्रिय है, महाराज नहीं ।

एकबार ऐसा हुआ, कुछ व्यापारी गढडा होकर किसी व्यवहार में जा रहे थे । महाराज उस समय गढडा में ही थे । इसलिये उन लोगो को हुआ कि यहाँ से निकल रहे है तो महाराज का दर्शन करके चले । सभी दर्शन करने गये । महाराज ने कहा आप सभी का संमान है, हमारे डोसाभाई का क्या समाचार है ? हमारी याद करते है या नहीं ?

महाराज अपने भक्त पर कितना स्नेह रखते हैं ? किसी भी प्रयोजन पर उनका कुशल क्षेम पूछते रहते हैं । जब महाराज डोसाभाई के विषय में पूछे, उस समय उन व्यापारियों के मन में पहले का ईर्ष्याभाव बाहर आ गया ।

महाराज ! डोसाभाई आपकी याद करें या धन्धे की याद करें । रात दिन धन्धे में पडे रहते हैं । आप के नाम लेने का उनके पास समय कहाँ ।

महाराज भी यह बात सुनकर हंस पडे । सायद उन सभी को यह पता नहीं था कि श्रीहरि इस बात को जानते हैं । महाराज के भाव को वे व्यापारी समझ नहीं शके उत्तर की इच्छा में बैठे रहे । अंत में महाराज बोले आप सभी डोसाभाई को पहचान नहीं शके, वे तोसांप की केचुल जैसे जगत को छोड़कर चले जांय ऐसे है ।

ऐसा सुनकर व्यापारी हंस पडे । वे सब कहने लगे इसमें कोई दम नहीं है । महाराज ने कहा मेरी आज्ञा पाकर डोसाभाई घर संसार छोडकर साधु होजाय तब आप मानेंगे । महाराज अपनी प्रतिष्ठा को ध्यान में रखकर ही बोले थे, फिर भी व्यापारियों को था कि इतना बडा व्यापार छोड़कर नहीं आ शकेंगे । सभी एक आवाज में बोल उठे कि महाराज यह संभव नहीं है । महाराज ने कहा जहाँ आप सभी जा रहे हो वहाँ से लौटते समय यहाँ आना ।

वे सभी महाराज के चरण स्पर्श करके चले गये। इधर महाराज पार्षदों को बुलाकर एक पत्र दिये उसके साथ एक पोटली भी दिये, और कहे कि बंधिया जाकर यह पत्र डोसाभाई को हाथ में देना, पोटली भी उन्हीं को देना, यदि डोसाभाई दो दिन रुकने को कहें तो रुकजाना ।

पार्षद पत्र लेकर चल दिये । वहाँ डोसाभाई अपने व्यापार में मशगुल थे । पार्षदों को देखकर डोसाभई प्रणाम करते हुए जय श्री स्वामिनारायण किये और महाराज की आज्ञा पूछे । पार्षद महाराज के पत्र को डोसाभाई के हाथ में दिये । महाराज की दी गयी पोटली भी दे दिये । डोसाभाई उसी समय पत्र खोलकर पढे, पत्र में लिखा था सन्यास लेकर गढडा आना है । दो दिन का समय आपको दिया जाता है ।

वह पत्र पढने के साथ डोसाभाई नाऊ को बुलाकर मुंडन करवाकर स्नान करके महाराज ने जिन लाल पकडे को भेजां था उसे पहन कर, पार्षदो से कहे कि चलो चलते हैं ।

पार्षदोने कहा घर एवं व्यापार किसी को सौपेंगे नहीं ? महाराज हमें दो दिन रुकने का समय भी दिये है । परंतु डोसाभाई ने कहा हमारे लिये तो महाराज की आज्ञा ही पर्याप्त है । बस साधु बनकर गढडा पहुंचना है ।

पार्षद भी डोसाभाई की यह निस्पृहता देखकर आश्चर्य में रह गये । उसी दिन तीनो गढडा के लिये निकल पडे दो दिन में गढडा पहुँच गये ।

डोसाभाई को परमहंस के वस्त्र में देखकर महाराज बहुत प्रसन्न हुए । अपनी आज्ञा का पालन हुआ इसलिये नहीं

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १७

सत्संग लाभदायिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

निर्मानानंद कैसे बन शकते हैं ?

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवान के समय की बात है । एक आदमी था, वह सत्संगी तो था लेकिन स्वभाव सांप जैसा था । सांप की तरह घर में क्रोध करता था । इसके आगे दुर्वासा भी कई गांव दूर थे । इतनी क्रोध करता कि कोई इसकी सीमा ही नहीं । इसका एक उदाहरण यहाँ दे रहे हैं - पढ कर दंग रह जायेंगे ।

स्वयं वह किसान था । एकबार किसी काम से बाहर गया था। वापस आते समय थोडी देर हो गयी । उस समय तो लाइट इत्यादि की कोई व्यवस्था नहीं थी । घर के आंगन में बैल गाडी पड़ी हुई थी जल्दी के कारण उससे टकरा गया, परिणाम स्वरूप पैर में चोट आ गयी। चोट लगने से दूसरे का कोई दोष नहीं, भूल किसकी ? गाडी जिससे टकराये उसकी भूल कही जायेगी । जल्दी के कारण अपनी ही भूल से टकराया, और यह परिणाम हुआ । जो लगते ही वह आग बबूला हो गया । इतना ही नहीं गाडी के जिस भाग से चोट लगी उसे दांत से काटने लगा । लेकिन उस अग्रभाग का तो कुछ नहीं हुआ बल्कि दो ऊपर के तथा दो नीचे के दांत टूट गये। विचार करो कि कितनी ताकात एवं कितना क्रोध रहा होगा ? इतना क्रोधी था कि गाँव के लोग बुलाने में विचार करते थे । कोई विशेष प्रयोजन होता तभी बुलाते । मंदिर में दर्शन करने आता तो उसे कोई बुलाता नहीं था । वह दर्शन करके चला जाता । कोई प्रसंग पर मंदिर में कहीं बैठ जाता तो उसे कोई ऐसा नहीं कहता कि तुम यहाँ से यहाँ बैठ जाओं । संयोग वशं ऐसे भक्त को वैराग्य उत्पन्न हो गया । यह गजब की बात नहीं हैं ? वह भगवान स्वामिनारायण के पास पहुंच गया । आप यहाँ इस समय ? बोला, मुझे साधु होना है । अरे बाप रे बाप ..... आप जानते हैं अपने संप्रदाय का क्या नियम है ? जब कोई संत दीक्षा लेना चाहता है तो स्वयं प्रत्यक्ष जाकर महाराजश्री से ऐसानहीं कहता कि महाराजश्री हमें दीक्षा दे दीजिये, पहले वे किसी संत को गुरु बनाता है, बाद में वह संत महाराजश्री के पास लाते हैं और दीक्षा विधि होती है । यह साम्प्रदायिक विधि है । वह साक्षात् भगवान स्वामिनारायण के पास जाकर कहने लगा कि - "मुझे साधु होना है।" महाराजने कहा कि साधु होना है यह तो ठीक है, लेकिनइसके पहले यहाँ जितने साधु बैठे हैं उनमें से कोई एक आपको शिष्य बनावे, बाद में हम दीक्षा दें ।

संत गांव-गाँव फिरते रहत हैं, इस लिये उस भक्त के स्वभाव को जानते थे । मन ही मन सभी संत विचार करने लगे, इन्हें कौन शिष्य बनायेगा ? कौन अपने मंडल में रखेगा ? इन्हें कुछ कहा जा सकता नहीं, ये तो प्रत्यक्ष धधकता हुआ आग का गोला है । इसलिये कोई तैयार नहीं हुआ । श्रीजी महाराज खडे होकर कहने लगे, अरे कोई तो इनका हाथ पकडो, इन्हें दीक्षा लेनी है । पांच सौ परमहंस थे, लेकिन कोई गुरु होने के लिये तैयार नहीं हुआ ।

विचार करो कैसा स्वभाव था । श्रीजी महाराज ने मुक्तानंद स्वामी को आज्ञा किया स्वामी ! आप इनके गुरु बनिये । स्वामी ने कहा कोई बात नहीं । अब आपकी आज्ञा का उल्लंघन कैसे हम कर शकते हैं । इसलिये मुक्तानंद स्वामी ने हाँ कर दिया । स्वामीने विचार किया कि इस आज्ञा में भी श्रीजी महाराज की कोई लीला उपदेशात्मक है । मुक्तानंद स्वामी शांति मूर्ति थे । वह व्यक्ति गर्म था । अब विचार यह करना है कि आग के गोले को कौन ठन्ढा कर शकता है ? केवल पानी । मुक्तानंद स्वामी शांति मूर्ति थे इसलिये हाँ कर दिये और दीक्षा देदिये । भगवान स्वामिनारायण की खूबी तो देखिये गुस्सेवालेको दीक्षा देकर निर्मानानंद नाम रख दिये । कितना विपरीत ? इसे निर्मानानंद कहा जायेगा । लेकिन महाराज ने नाम रखा है । बाद में महाराज ने मुक्तानंद स्वामी से कहा आप इनकी परीक्षा ले शकते

हैं ।

मुक्तानंद स्वामी नये संत को एवं पुराने दो-चार संतो को साथ लेकर धर्म प्रचारार्थ निकल पड़े । सूर्यास्त होने से पहले एक गाँव में पहुँच गये । छोटा एक मंदिर था । उसी में संतो के साथ स्वामी रुके । सभी लोग अपने कमंडलु एवं अन्य पात्र दीवाल की खूंटी में लटका दिये । निर्मानानंदजीने भी सभी का अनुकरण किया । लेकिन सभी संत क्रमशः प्रत्येक खूंटी पर अपनी अपनी वस्तु लटकादिये निर्मानानन्द को कोई लटकाने नहीं दिया सभी ठुकराते हुए आगे जाइये - आगे जाइये कहने लगे, अब वे बिना क्रोध-आवेश के आगे अर्थात् मंदिर के प्रांगण में जाकर अपनी सभी वस्तु लटकादिये और माला लेकर जप करने लगे । यह देखकर मुक्तानंद स्वामीने बुलाकर कहा निर्मानानंद ? आइये मेरे बगल में अपनी पूजा की सामान रखिये ।

जय जयकार हो गयी । निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है कि "सरल वर्तवे छे सारुं रे मनवा, सरल वर्तवे सारुं, माने एटलुं वचन मारुं रे मनवा ..... ।

जो सरल वर्तन करते है उन पर भगवान एवं संतो की कृपा होती है परिणाम स्वरुप सारा दोष स्वयं चला जाता है ।

तुलसी के वृक्ष में मोती

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

हृदय से, श्रद्धा से किया गया दान ही दान कहलाता है । यह कहावत गलत नहीं है । एक नगर में एक राजा रहता था, वह दानवीर था । वह दान को ही तप मानता था । दान जैसा दूसरा कोई पुण्य का साधन नहीं है, ऐसा मानता था । उसके यहाँ कोई ब्राह्मण आता तो उसे यथोचित दान करता । लेकिन भगवान का भक्त होना चाहिए ऐसा मानता था कि यह सुपात्र है या नही, सुपात्र को ही दान देना चाहिए ।

सावन का महीना आया, राजा अपने नगर में जहाँ मंदिर या नदी के किनारे ब्राह्मण पूजा-पाठ, जप-तप कर रहे थे वहाँ जाकर सोना-मोहर का दान करने लगा ।

राजा दान करते हुए नदी तट पर एक ब्राह्मण के पास पहुँचा वह ब्राह्मण स्नान करके सन्ध्या कर रहा था, उसी समय राजा उस ब्राह्मण के पास अन्य ब्राह्मणों की तरह सोना-मोहर रखा, तुरंत ही उस ब्राह्मणने कहा राजन् ! आप का यह धन अभी नहीं लेंगें, महीने के अंत में लेंगे यद्यपि प्रतिदिन राजा आकर दे लेने का आग्रह करता फिर भी वह लेने के लिये तैयार नहीं होता था । महीना पूर्ण होते ही राजा अधिक मात्रा में सोना-मोहर लेकर उस ब्राह्मण के पास पहुँचा, बड़े आग्रह के साथ सामने सभी धन रखा और कहा हे ब्राह्मण देवता ! आज सावन मास का अंतिम दिन है अब इसे स्वीकार करें तब ब्राह्मण ने कहा हे राजन् ! यह धन आप कहाँ से लाये यह सुनकर राजाने कहा यह धन राजकोष में से लाये हैं । ब्राह्मण ने कहा उस कोष में कभी-कभीअनीति के धन भी आते है, अतः आपके पुरुषार्थ का जो धन हो उसे आप दान कीजिये । यह सुनते ही राजा ने स्वीकार कर लिया और कहा कि आप कल हमारे दरबार में पधारे ? वहाँ आप की हम सेवा करेंगे । रात्रि में राजा मजदूर का रुप धारण करके नौकरी की खोज में निकल पडा । एक लोहार के यहाँ जा पहुँचा और कहा भाई ! हमें नौकरी करना है । उस लोहार ने कहा हाँ आजा धमनी धौंकना है और घन से लोहे को पीटना है । राजा यह काम करना चालू कर दिया । जिंदगी में कभी मजदूरी नहीं कीथी । हाथ सूज गया । हथेली में छाले पड़ गये । शरीर पसीने से लथपथ हो गयी राजा का धैर्य टूट गया । जैसे तैसे आधा घंटा काम कर शके । लोहारने कहा ये भाई तूं यह काम बन्द करे दें यह तेरा काम नहीं इस तरह काम करने से हमारा काम बिगड़ रहा है । ऐसा कहकर उस लोहारने दो पैसा देकर राजा को विदा कर दिया । राजा वह दो पैसा लेकर महल में गया । खूब प्रसन्नथा । अच्छी तरह नींद भी आ गयी । प्रसन्नता का कारण यह कि कल आने वाले ब्राह्मण को अपनी कमाई का हम दे शकेंगे । उधर ब्राह्मण देवता जब घर गये तब उनकी पत्नी ने कहा कि हे ब्राह्मण देवता आज महीने का अंतिम दिन था तो भी आप खाली हाथ आये । तब ब्राह्मण देवता ने कहा कल राजा हमें राज दरबार में बुलाये है। पत्नी को तो ऐसा हो गया कि मेरे पति को खूब बडी दक्षिणा मिलेगी । लेकिन हुआ ऐसा कि दूसरे दिन ब्राह्मण देवता जब दरबार में पहुँचे

तो राजा ने दो पैसा दान में दिया और कहा कि यह हमारी कमाई का है। प्रमाण में अपने हाथ को दिखाया छाले पडे हुए थे। राजाने कहा ब्राह्मण देवता इन दो पैसों से आप की दरिद्रता दूर नहीं होगी। ब्राह्मण देवता ने कहा यही सच्ची कमाई है, इसी से हमारी दरिद्रता दूर होगी। आप के लिये फलदायक होगी। ऐसा कहकर ब्राह्मण देवता घर आये। इधर ब्राह्मण की पत्नी खूब बडी आशा लेकर बैठी थी। ब्राह्मण देवता को देखते ही कहने लगी क्या लेकर आये हैं। तब ब्राह्मण देवताने अपनी मुठ्ठी खोलकर दो पैसे दिखाया। दो पैसे देखते ही पत्नी ने कहा, यही पूरे एक महीने का आप को दान मिला है? राजा के यहाँ दान लेने गये थे? आप को दो पैसे दान लेते शर्म नहीं आयी? या राजा को दो पैसे दान देते शर्म नहीं आयी? पत्नी की गर्मी को शांत करते हुए राजने कहा कि हे देवि! यही सच्चा दान है। ऐसे दान से ही वृद्धि होती है। ऐसे धन से लेने एवं देने वाले दोनो बड़भागी होते है। संयोगवश वह दो पैसा कहाँ लुप्त हो गया पता नहीं। अब ब्राह्मण देवता उस पैसे को खोजने लगे लेकिन मिला नहीं। सही तो यह कि ब्राहमण देवता के आंगन में तुलसी की एक क्यारी थी, उसी में जाकर गिर गया था। जहाँ पर वह पैसा गिरा उस क्यारी की तुलसी दिन रात्र बढने लगी। परिणाम स्वरूप एक ही दिन के अंतर में ब्राह्मण पत्नीने देखा की तुलसी के वृक्ष में रहर के दाने जितने अनेकोमोती निकली हुई है। उसके आश्चर्य की सीमा ही नहीं रही। ब्राह्मण देवता तो देखते-देखते धनवाल हो गये।

मित्रों! शुद्ध एवं सच्चे धन से,पसीने बहाकर प्राप्त की गयी वस्तु हमेशा सुखकारक होती है। आप भी सदा यह ध्यान रखकर जिंदगी में मेहनत करके धनोपार्जन करोगे तो सुखी रहोंगे। मेहनत से पढी गयी विद्या भी यश कारक एवं सुखकारक होती है। विना मेहनत की प्राप्ति का विचार भी कभी नहीं करना। मेहनत का दो पैसा भी ब्राह्मण के लिये कितना लाभ प्रद हुआ। आप को भी अपने घर मोती उगाना होतो खूब मेहनत करना। इसीलिये तो भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि जो पुरुषार्थ करते हैं उन पर भगवान की कृपा होती है। जिसके ऊपर भगवान की कृपा होती है उसकी सदा जयजयकार होती है।

पृष्ठ १४ से आगे.....

सत्संग सुरभि : ''संसार शुं सरसो रहे पण मन मारी पास''

बल्कि डोसाभाई किस उच्च कक्षा के जीव है, जिन के मन में आत्मसमर्पण कीभावना है इसलिये। ऐसे लोग स्तुति करने योग्य होते है, राजा जनक की तरह निस्पृह। सामने आते देखकर महाराज दौडकर उन्हें गले लगा लिये। उनका भक्त आज संसार पर विजय प्राप्त किया था। आज समाज में जिसकी सभी को चाहना है ऐसे धन-वैभव का परित्याग करके, परिवार तथा प्रतिष्ठा सभी का तृणवत् त्याग करके डोसाभाई महाराज की शरणागति स्वीकार कर लिये।

महाराज को मिलकर जो द्वेषी पहले यह कहकर गये थे कि संसार त्याग कर डोसाभाई का आना संभव नहीं है! जब वे वापस आकर उन्हें सन्यासी स्म में देखे तो आश्चर्य की सीमा न रहीं! वे सभी बोल उठे महाराज निश्चित ही आप कोई दिव्य पुरुष हैं और डोसाभाई का त्याग भी उतना ही प्रसंशनीय है।

महाराज उन सभी को बुलाकर कहे कि किसी के बाह्य व्यवहार से अन्तर की गरिमा का आंकलन नहीं करना चाहिये। आप सभी को डोसा भाई केवल धंधा करते दिखाई देते थे, परंतु ये तो जब से हमारे सत्संग में आये तभी से संसार त्याग चुके हैं। किसी भजन में कहा गया है कि ''संसारनुं सरसो रहे, पण मन मारी पास!'' ऐसे डोसाभाई संसार में रहकर भी हमारे हैं।

महाराज का पत्र पाते ही यदि कोई घर-संसार, धंधा-व्यापार सबका त्याग कर शकता है तो केवल डोसाभाई ही कर शकते हैं।

ईर्ष्यालु सभी महाराज के चरणों में गिरकर कहने लगे - महाराज हमें माफ कर दो। हम आपको तथा आपके भक्त को पहचान नहीं शके। अब हम आपकी शरण में हैं। ऐसा कहकर सभी महाराज की चरण में गिर गये। महाराजने सभी को उठाया और आशीर्वाद दिया कि आप सभी की भक्ति भी डोसाभई की तरह अचल बने। ऐसा महाराज का प्रताप था और भक्त भी उन्ही के जैसे थे। नाम भले डोसाभाई था परंतु महाराज के प्रति इतना स्नेह एवं निष्ठा थी की ऋतुराज वसंत की तरह इनका हृदय खिला हुआ था।

।। भक्तिसुधा ।।

सहजानंद स्वामी - श्री स्वामिनारायण भगवान बने

- श्रीमती पुष्पाबहन केराई

उत्तर प्रदेश के छपैया गाँव में अवतार लेकर घनश्याम महाराज इग्यारह वर्ष तक बाल चरित्र किये। माता भक्ति एवं पिता धर्मदेव को स्वधाम भेंज कर इग्यारहवें वर्ष में घर का त्याग करके वन विचरण करते हुए कठिन तप करके नीलकंठ वर्णी के स्प में सात वर्ष तक अद्‌भुत दिव्यलीला किये थे।

समग्र भारत को पावन करके घनश्याम महाराज मांगरोल गाँव में गोवर्धनभाई की बूआ का उद्धार करके लोज गाँव में मुक्तानंद स्वामी के परिचय से अपनी इच्छा केअनुसार गुजरात भूमि को अपनी कर्मभूमि बनाये।

बदरिकाश्रम में पूर्व नियोजित योजनानुसार - उद्धवावतार श्री रामानंद स्वामी को गुस्पद पर प्रतिष्ठित किये। अट्ठारह वर्ष की अवस्था में पीपलाणां में श्री रामानंद स्वामी के स्थान पर गुस्पद की दीक्षा ग्रहण करके सरयूदास के स्प में प्रसिद्ध श्री सहजानंद स्वामी के नाम से प्रतिष्ठित हुए। श्री रामानंद स्वामी ने इन्हें नारायण मुनिकी पदवी भी अर्पण की थी।

श्री रामानंद स्वामी के साथ प्रभु तीन वर्ष तक थे। जेतपुर में श्रीहरि, रामानन्द स्वामी के आग्रह पर उद्धव सम्प्रदाय की गद्दी सम्हाली। फणेणी गाँव में श्री रामानंद स्वामी स्वधाम पधारे, उसी के चौदहवें दिन श्री सहजानंद स्वामी श्री स्वामिनारायण भगवान के स्प में प्रसिद्ध हुए।

सहजानंद स्वामी से स्वामी एवं नारायण मुनि से नारायण शब्द लेकर स्वामिनारायण अलग प्रतिष्ठित नाम रखा गया। नारायण अवतार एवं अनेक जीवों के स्वामी श्री स्वामिनारायण भगवानने श्री उद्धव संप्रदाय को श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का स्प दिया।

इक्कीस वर्ष की उम्र में प्रभु ने संप्रदाय की गद्दी सम्हाली। श्री स्वामिनारायण भगवानने गुजरात में उन्तीस वर्ष तक अपनी लीलाओं का प्रसारण करके श्री स्वामिनारायणं की कीर्ति सुवास फैलाई। प्रभु ने अपने इन थोडे समय में जो पुस्वार्थ किया वह औदाहार्य रहा - यही स्वामिनारायण संप्रदाय की विशेषता है।

उन्तीस वर्ष के थोडे समय मे श्री स्वामिनारायण भगवानने समग्र गुजरात को अपना दीवाना बना दिया। कच्छ, सौराष्ट्र गुजरात, काठियावाड में पदयात्रा करके घनश्याम महाराज ने कमाल कर दिया। समग्र गुजरात एवं देश में अनेकों अनुयायियों को बनाया। अनेकों जीवो को कंठी बांधकर मोक्षभागी बनाया।

सत्संगियो के यहाँ प्रसाद लेकर उनके जीवन को धन्य कर दिया। समाधि प्रकरण चलाकर बड़े-बड़े को मात कर दिया। अपने सत्संगियो के अंतिम समय में दर्शन देकर अक्षरधाम ले गये।

गुजरात में अनेकों परिवारो में चल रही दूध पीते बालको की हत्या एवं मृत पति की चिता पर पत्नी के जलने की प्रथा को रोका। छोटी उम्र के बच्चो के बाल विवाह की प्रथा को भी बन्द करवाया।

सत्संगियो का पंचवर्तमान पालन करने का नियम अपनी उपस्थिति में प्रारम्भ करवाया। नीति-नियम से युक्त सभी के जीवन को बनाया।

महान बड़े-बड़े यज्ञ करवाकर गुजरात को पावन कर दिया। भव्य मंदिरो का निर्माण कराकर उस में अपने हाथों से श्री नरनारायणदेव, लक्ष्मीनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव के विविध स्वस्पों को प्रतिष्ठित करके समग्र गुजरात को धार्मिक बना दिया।

उत्तर-दक्षिण विभाग का विभाजन करके दो गद्दी की स्थापना करके आचार्यपद पर अपने ही स्वस्प को प्रतिष्ठिक करने के लिये धर्मकुल की परम्परा बनाई।

अपने हाथों से शिक्षापत्रीं लिखकर श्रीजी महाराजने जगत को निहाल कर दिया। सत्संगियों के लिये अक्षरधाम का दरवाजा खोल दिया। वचनामृत जैसे ग्रंथो की रचना करवाये।

श्री रामानंद स्वामी के पास से पास से लिये गये दो बरदानो में से श्रीजी महाराज ने सभी सत्संगियो का कष्ट हरलिया और सभी प्रकार से सुखी कर दिया।

इस पृथ्वी पर स्वेच्छया सं. १८८६ की ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को अपनी अलौकिक लीला समेटकर स्वधाम पधारे थे। अंत में अपने आश्रितों को देव, आचार्य, शास्त्र एवं आचार्य दीक्षित संतो में प्रत्यक्ष रहने का वचन दिये थे।

●

सुनहरा इतिहास

- मंगुबहन प्रहलादभाई पटेल
(जीवराजपार्क-अहमदाबाद)

सं. १८६३ में भादरवा गाँव से श्री स्वामिनारायण भगवानने एक पत्र लिखा। जिस में यह आज्ञा कीया कि कितने बड़े-बड़े राजपूत एवं राजा तथा धनाढ्य है वे संत की दीक्षा लेकर भुज पहुँचे। वह पत्र वांचने के साथ श्रीहरि के १०८ भक्त सन्यस्त होकर भुज के लिये निकल पडे। उस पत्र में आदि शब्द लिखा हुआ था। गडु गाँव के कल्याणदास तो लग्न मंडप में पत्र कीवात जानकर लग्न मंडप से निकल पडे थे। उनका यह अद्‌भुत भगवद्‌बल देखकर श्रीहरि अति प्रसन्न होकर उनका नाम अद्‌भुतानंद रख दिया था।

वे अद्‌भुतानंद स्वामी संत बनकर

वडताल में थे, उस समय उनके पूर्वाश्रम के भाई श्री बजूभाई उन्हें समझाने आये थे। लेकिन हुआ ऐसा कि अद्‌भुतानंद की वैराग्य युक्त वाणी सुनकर बजुभाई भी संत बन गये, श्रीहरि उनका नाम निष्कामानन्द स्वामी रखा। इस वात को करीब १ महीना बीत गया तोउनके तीसरेभाई वीठ्ठलभाइ दोनो भाईयों को समझाने आये, उनके साथ भी अद्‌भुतानंद स्वामीने ऐसी वैराग्य की वातें की कि वे भी वैराग्य के रस में डूब गये परिणाम स्वरूप श्रीजी महाराज दीक्षा देकर उनका नाम चैतन्यानन्द रखा था। तीनो भाई साधु होकर श्रीहरि की सेवा करने लगे, यह सुनकर सबसे छोटेभाई कुबेरदास बड़े उदास हो गये, उन्हे भी संसार की असारता का आभास होने लगा, वे घर-परिवार छोड़कर प्रातः गढडा के लिये निकल पडे। आप विचार कर शकते हैं श्रीहरि के प्रति लोगों में कितनी आसक्ति है। कितने वैराग्यवान एवं पवित्र तत्कालीन लोग थे। तीनों भाईयों की त्यागवृत्ति से चिंतातुर होकर उनकी तीनो बहने श्रीहरि के पास गढडा पहुंच गयी।

प्रभु से प्रार्थना की कि हे प्रभु इन चारो भाइयों में से एक भाई को हम सभी के लिये वापस कर दीजिये। अन्यथा हम सभी का व्यावहारिक कार्य कैसे होगा। यह प्रार्थना सुनकर प्रभु ने कुबेरदास को आज्ञा किया, जिससे कुबेरदास संसार में रहते हुए भी पुष्कलपलाशवत् निर्लेप रहे। ऐसे मुक्तात्माओं को लाखों बन्दन। स्वामिनारायण सम्प्रदाय का यह सुनहरा इतिहास हमें बहुत कुछ सिखाता है।

•

चातुर्मास

- हसुबहन एम. व्यास (अहमदाबाद)

चातुर्मास मनुष्यों के लिये बहुत पवित्र माना जाता है। ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। यह महीना वर्षाऋतु में आता है। इस महीने में विशेष रूप से भजन-भक्ति करने की आज्ञा श्रीहरिने शिक्षापत्री में की है। आश्रितों को चार महीने विशेष नियम करने की भी आज्ञा की है। जिसमें विष्णु कथा श्रवण, वांचन, गुण कीर्तन, मंत्रजप, स्तोत्रपाठ, प्रदक्षिणा, साष्टांग प्रणाम इन में से कोई एक नियम चार महीने के लिये लेना चाहिये। इन सभी में से प्रथम कथा श्रवण की वात कही गयी है। कथा श्रपण से मन पवित्र होता है।

कथा श्रवण से सद्‌बुद्धि आती हैं। गोपियां भी भगवान श्रीकृष्ण के लिये गाती थीं - "तव कथामृतं तप्तजीवनम्" आप की कथा तप्तजीवन के लिये अमृतरूप है। इसलिये कथा सुनने का आग्रह सभी को रखना चाहिये। इसी बहाने संत समागम भी होता है, लेकिन संत समागम के समय अहंभाव नहीं आने देना चाहिये। "मानतजी संतन के मुख से प्रेम सुधारस पीजे हो, निश दिन, संत समागम कीजे।" जो भी क्रिया निष्ठा पूर्वक करेगा उस पर श्रीजी महाराज अवश्य प्रसन्न होंगे। नियम पालन करने में प्रमाद नहीं करना चाहिये। पवित्र रहना चाहिये, कोई प्रकार का व्यसन नहीं होना चाहिये। त्यागी एवं गृहस्थ दोनो को श्रीजी महाराज ने अलग-अलग धर्म बताया है। इस लिये चातुर्मास में जितना हो शके उतना अवश्य नियम लेना चाहिये। इसके लिये संप्रदाय में चार महीने का नियम प्रत्येक मास में अलग- अलग भी बताया गया हैं। जैसे (१) प्रथम मास में शाक का नियम (२) दूसरे महीने में दही का नियम (३) तीसरे महीने में दूध का नियम (४) चौथे महीने में दाल का नियम लेना चाहिये। इन नियमों से आहार पर नियंत्रण होजाता है। इसके साथ इन वस्तुओं का एक महीने तक त्याग कर नियम का पालन किया जा शकता है। एकादशी का व्रत करना भी एक नियम है। परंतु कोई भी नियम भक्तिभाव से करना चाहिये यही श्रीहरि की आज्ञा है।

कितने लोग भक्ति का यह रूप मानते है जैसे - डाकोर-वडताल जैसे तीर्थों में पैदल चलकर जाते है - प्यास, भूख, रात्रि जागरण, ठन्डी, गर्मी को सहना इतना सब कुछ सहन करने के बाद भी व्यसन नहीं छूटता। सत्य-अहिंसा जैसे धर्म से विरुद्ध आचरण करते हैं। स्त्री-पुरुषों की मर्यादा का पालन न करे तो सब करना व्यर्थ है। इस लिये चातुर्मास में धर्म सहित भक्ति करने का नियम रखने से श्रीहरि प्रसन्न होते हैं। निष्काम भक्ति करने से ही श्रीहरि की प्रसन्नता मिलती है। जब परमात्मा की प्रसन्नता मिलती है तो अक्षरधाम का सुख मिलता है। भगवान श्री स्वामिनारायण से प्रार्थना करें कि हम नियम में रहकर आपकी भजन कर शकें।

•

सच्चे सत्संगी कब हो शकते हैं ?

- पार्षद सवितावहन गुरु सां.यो. बचीवा (जेतलपुर-हवेली)

कितने लोग कहते हैं कि हम स्वामिनारायण भगवान के चुस्त सत्संगी है। लेकिन चुस्त सत्संगी होने के लिये बहुत नियम बताया गया है। केवल गले में कंठी पहनने से कोई सत्संगी नहीं होता हैं। संत ने गले में कंठी बांधी है अब कुछ करने को रहा नहीं। लेकिन आप को पता नहीं पंच वर्तमान के नियम पालने के विना मात्र कंठी बांधने से सच्चा सत्संगी होना संभ नहीं है। सच्चा सत्संगी होने के लिये बा सारे नियम करने पडते है। जीवनमें भक्ति भजन, न हो तो उसे कैसा सत्संगी मा जाय ?

एक गांव में कानी नाम की एक महिला रहती थी। समाज में ऐसी खबर कानो कान फैल जाती जो आत्म हत्या से सम्बंधित हो, कानी महिला सभी से आत्मघात कैसे होता है ऐसा पूछती रहती थी। लोग उसे बताते गले में डोरी बांधकर लटक कर मरना आत्मघात है। यह सुनकर उसके घर में कोई उससे झगड़ा करे तो यही कहती कि हमारे पीछे पड़ोगे तो हम आत्म हत्या करलेंगी। संयोग वश एक दिन घर में झगड़ा हो गया, वृद्धा को क्रोध आया और कहने लगी अब इन लोगों को

सबक सिखानी ही पड़ेगी। वह बैल बांधने की डोरी अपने गले में बांधकर गौशाला में जाकर सो गई। सायंकाल घर के लोग जब एकत्रित हुए खाने का समय हुआ लेकिन वृद्धा नहीं, लोगो को चिन्ता हुई, लोग खोजने लगे, आवाज देने लगे, सुनकर वृद्धा ने कहा, तुम लोग मरो, मैं तो आत्म हत्या करली हूँ।

''जेम कानी कोटे घाली गाणियुं,
जई सूती सोडताणीने।
मन में जाणे हूँ मरी गई,
एवुं न करवुं जाणी ने ?''

कानी वृद्धानी तरह गले में डोरी बांधकर हम पक्की सत्संगी हो गयी है, तुम लोग मरो ? इस तरह कोई पक्का सत्संगी होता हैं क्यां ?

पक्का सत्संगी होने के लिये तो समय खपाना पड़ता है। खाली गले में डोरी बांधने से कोई आत्महत्या होती है क्या ? इसके लिये ऊपर से लटकना पड़ता है। केवल गले में डोरी लपेटने से कोई मरता नहीं। इसी तरह मात्र गले में कंठी बाधलने से कोई पक्का सत्संगी नहीं होता। कंठी को बांधकर समर्पित भी होना आवश्यक है। प्रीति नियम पंचवर्तमान सभी का ध्यन रखना पडे। तभी हम पक्के सत्संगी हो सकेंगे।

इस तरह नियम-धर्म-मर्यादा चुस्त रीत से पालन किया जाय तभी श्रीजी महाराज के हम पक्के आश्रित कहलायेंगे।

●

कडवी माधुरी बनी

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला
(अहमदाबाद)

जेतपुर गाँव में जीवा जोषी नाम के ब्राह्मण रहते थे। उनको शिवराम बेटा एवं कडवी नाम की बेटी थी। नाम भले कडवी था लेकिन स्वभाव में शहद जैसी माधुरी थी। सदा श्रीजी महाराज की भजन करती रहती थी। हृदय से सदा आनन्दित रहा करती थी। लेकिन उसके पति को यह सब अच्छा नहीं लगता था। रात दिन स्वामिनारायण..... स्वामिनारायण जपा करती है। दूसरा इसके पास कोई काम नहीं ? ऐसा कहकर पत्नी को डांटा फटकार करता था। एक दिन तो उसके हथेली पर खाट का गोड़ा रखकर सो गया और कहने लगा कि इस धनी का कोई धनी नहीं है। कडवीबाई ने कहा इस धनी का धनी भगवान हैं। हथेली पर क्या छाती पर पाया रखकर सोयेगा तो भी स्वामिनारायण की भजन नहीं छोड़ूंगी। इतना कहकर पुनः भजन चालू कर दी .....

व्हाला समझुम करतां कान मारे घेर आवोने।
मारा पूरा करवा कोड हसीने बोलावो ने.....॥

पति यह सुनकर खूब क्रोधित होकर उसकी छाती पर खाट का पाया रखकर सो गया। पत्नी स्वामिनारायण नाम का कीर्तन करते करते सहन करती रही।

बालकपन से कडवीबाई का चित्त संसार में नहीं था। उसे तो महाराज की माधुरी मूर्ति का अहर्निस चिंतन रहता था। एकबार क्रोध में उसने अपनी पत्नी को कह दिया कि आज से तुम हमारी मा-बहन हो।

कडवी को यही चाहता रहा। वह अपने पति के पग पर मस्तक रखकर कहने लगी आज से आप हमारे बाप-भाई ! मेरा पति मर गया। इतना कहकर अपने हाथ की चूंडियां फोड़ डाली। माथे का सिन्दूर भी मिटाडाली। पति के नाम से स्नान करली।

उसका पति पत्नी की वैधव्य लीला देखकर अवाक रह गया। दूसरे दिन पति अपने ज्ञाति के लोगो से कहा, ज्ञाति के लोग कडवीबाई पर खूब क्रोधित हुए और कहने लगे कि तुम अपने से मरजा अन्यथा हम तुम्हे मार डालेंगे।

यह बात काठी दरबार के पास पहुंची। दरबार महाराज को बहुत मानता था, इसलिये सारी हकीकत जानकर तलवार लेकर निकल पड़ा और इन सभी से कडवी बाई को मुक्त कर दिया। वह आनन्द का अनुभव करने लगी। मुक्त होकर वह गढड़ा चल पडी। लेकिन नदी में बाढ आई थी। बाई महाराज का स्मरण करके नदी में कूद पडी। महाराज के दर्शन की इतनी अधिक लालसा थी कि पानी की बाढ में भी महाराज का दर्शन हो रहा है। परिणाम स्वरूप वह बाढ का बेग सामने वाले घाट पर पहुँचा दिया। इस प्रकार वह गढडा पहुँच गयी। सीधे दादा खाचर के दरबार की तरफ महाराज के दर्शन हेतु चल दी।

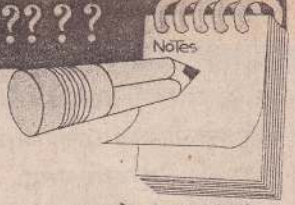
महाराज सभा में विराजमान थे। दूर से कडवीबाई को आते देखे। आओ कडवीबाई ! हम आपकी ही राह देख रहे थे। इस प्रकार स्नेह भरा शब्द सुनकर कडवी बाई का हृदय गदगद हो गया। महाराजने कडवी बाई का नाम रामबाई रखकर लाडूबा एवं जीवुबा के साथ रख दिया। रामबाई गढडा में इतनी प्रगति की कि आज भी उसका स्मरण बना रहता है।

रामबाई की इस समर्पण भक्ति के ऊपर प्रेमानंद स्वामीने गीत लिखा है -

''मेरो कंगन निकारी गयो रे''... ।

आज से दो सौ वर्ष पूर्व पति के जीवित रहते अपनी चूडियाँ फोड़कर मस्तक का सिंदूर धोकर मात्र श्रीहरि को अपना पति मानकर उन्ही की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करके रहना यह साधारण बात नहीं है। यह हिंमत कैसे आयी ? स्वामी सहजानंदजी महाराज के नाम से ? समर्पण के भाव से ? कडवी सत्संग सीखने कहाँ गयी थी ? वह अपने अन्दर में श्रीहरि को देखी, स्वीकार किया, समर्पित हो गयी। इसलिये कडवी माधुरी बनकर समग्र जीवन सत्संग की सेवा की एवं मधुरता का माधुर्य सब पर आज भी बरस रहा है।

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ भक्ति क्या है, शिक्षापत्री के अनुसार व्याख्या करो ?

प्रश्न : २ "कोई पुरुष में क्रोधादि स्वभाव हो तो जाये या न जाये ?" वचनामृत मे यह प्रश्न किसने पूछा था ?

प्रश्न : ३ सं. १८६४ में श्रीजी महाराज सुंदरीयाणा गाँव के दरबार श्री डोसा खाचर के दरबार में पधारे तब डोसा खाचरने अपने नौकर वनाशेठ तथा पूंजाशेठ के घर जाकर कहा कि हमारे गुरु स्वामिनारायण पधारे है । दर्शन करने चलो, दोनो दर्शन के लिये चले पर मन में क्या संकल्प था ?

प्रश्न : ४ एकबार श्रीजी महाराज मांगरोल में गोवर्धनभाई के घर सभा कर बिराजमान थे। सभा में कई सत्संगी बैठे थे । एकबार एक सत्संगीने पेडा की थाल भर कर महाराज के आगे रखा तब महाराजने गोवर्धनभाई से कहा "हमे खिलाओ" तब गोवर्धनभाईने क्या किया ?

प्रश्न : ५ जेतपुर के जीवा जोशी की एक बेटी का नाम कडवीबाई था । उनके पति ने अनेक असह्य कष्ट देकर सत्संग छोडाने के खूब प्रयास किए किन्तु कडवीबाईने जीवन संकट में डालकर सत्संग चालू रखा था । पति के त्याग के बाद महाराजने कडवीबाई को गढपुर में किस नाम से रखा था ?

प्रश्न : ६ एकबार पर्वतभाई पत्नी के साथ श्रीजी महाराज के दर्शनार्थ गढपुर गये थे । श्रीजी महाराज जानते थे की पर्वतभाई अन्न-जल के बगैर सात दिन बिताये हैं किसी को ख्याल नहीं है । फिर सबके सुनते ही महाराज ने पूछा की "पर्वतभाई आप कहाँ खाते हो ?" पर्वतभाईने क्या जवाब दिया ?

प्रश्न : ७ "तमारी मूरति विना मारा नाथ रे, बीजुं मने आपसो मां" ये कीर्तन किसने गाया है ?

अगस्त २००७ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) मायाराम भट्टने कहा "अपने गुरु रामानद स्वामी को पूछकर जवाब दूंगा" भट्टजी रामानंद स्वामी के पास लोज में यह पूने गये । (२) श्रुति स्मृति में प्रतिपादित किया गया जो सदाचार उसे धर्म जानना शिक्षापत्री श्लोक नं. १०३ है । (३) वचनामृत में ६० वाँ है । (४) गीता के ८ वें अध्याय में कहा है "हे अर्जुन ! यह जीवात्मा अंतकाल में जिस भाव का स्मरण करती हुई देह का त्याग करती है तथा जिस भाव का चिंतन करती है उसी भाव को प्राप्त करती है । (५) वचंनविधि नाम के ग्रंथमें निष्कुलानंद काव्य । (६) पंचाला के ठाकोर जीणाभाई । (७) "हालरडु अति वहालु, हरिने गावे गोपी हालरडु" इस पद के रचइता ब्रह्मानंद स्वामी है ।

१. सां.यो. शिल्पाबा तथा शीतलबा
२. सां.यो. उषाबा तथा चंद्रिकाबा
३. हर्षदभाई स्वामिनारायण मंदिर, बापुनगर
४. राओल राजेन्द्रसिंह (मितली)
५. ईश्वरभाई, घनश्यामभाई (सांपावाडा)
६. महेशभाई पटेल (असलाली)
७. पृथ्वीराज सिंह दरबार, विश्वजीतसिंह, मितेश, रमेश, प्रितेश, मंदिप, अनिल, अमित, सुरेश (जेतलपुर)
८. कंचनबेन बाबुभाई पटेल (रतनपर)
९. माधवजीभाई आद्रोजा (मोरबी)
१०. ऋतु हिंमतभाई काछडीया (अहमदाबाद)
११. रिन्कु एन. खीचडीया (बापुनगर)
१२. राधिका बाबुभाई काछडीया (बापुनगर)
१३. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल (राणीप)
१४. गंगाबहन भक्तिभाई पटेल (झुलासण)
१५. ज्योत्सनाबेहन राजेशकुमार कोठारी (आनंदुपरा)
१६. भगवानदास वेलजीभाई सोनी (मोरबी)
१७. माणेकबहन मणीलाल पटेल (देहगाम)
१८. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल (देहगाम)
१९. कैलाशबहन विष्णुभाई पटेल (नांदोल)
२०. अंजनाबहन मनुभाई पटेल (नांदोल)
२१. सां.यो. भारतीबा तथा सां.यो. शांताबा (गादीवालाश्री की हवेली, अहमदाबाद)
२२. वीणाबहन आर. भावसार (अहमदाबाद)
२३. अरविंदबहन एन. भावसार (चांदलोडीया)
२४. हसुमतीबहन ठक्कर (इसनपुर)
२५. प्रफुलाबहन शरदभाई पटेल (उवारसद)
२६. चंद्रिका, ज्योत्सना (जीरागढ)
२७. विठ्ठलपरा अमरशीभाई बी. (नवसारी)
२८. गोरधनभाई एस. पटेल (सोजा)

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

२. प्रश्न का उत्तर स्वच्छ अक्षर में होना आवश्यक है, जिससे सरलता से उसे पढा जा शके । पत्र के ऊपर एक ही व्यक्ति का नाम होना आवश्यक है, उसी का नाम अंक में छापा जायेगा ।

सत्संग समाचार

प.पू. लालजी महाराजश्री का १०वाँ जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया

सर्वावतारी श्रीहरि के ८ वें वंशज श्री नरनारायणदेव देश-पीठ स्थान के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री ब्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का १०वाँ जन्मोत्सव आषाढ वद-१० के दिन खूब हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।

श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती अपने हाथों से उतारकर अपने दादा तथा पिताजी की उपस्थिति में प्रसादी के सभा मंडप में सुंदर आसन पर जब बिराजमान हुए - उस समय सभी संत हरिभक्तों को श्रीहरि के तीनों अपर स्वरूपों का एक साथ दर्शन होने से दिव्य आनंद की अनुभूति हुई थी । प.पू. लालजी महाराज के जन्मोत्सव को मनाने में मेघराजा भी प्रसन्न मन से वरस रहे थे । जिससे शुभानुभूति, मंगल अनुभति हो रही थी ।

प्रथम विद्वान पंडितो द्वारा स्वस्ति वांचन हुआ । बाद में संतोने एवं हरिभक्तों ने पुष्पमाला पहनाकर आरती उतारी थी । संतोने प्रसंगोचित वक्तव्य में शुभ कामना व्यक्त की । पू. महंत स्वामी ने सभा का सुंदर संचालन किया । इस प्रसंग पर प.पू. महाराजश्रीने अपने हाथों से "श्रीहरि कीर्तन" जीरागढ (हालार) मंदिर द्वारा प्रकाशित सत्संग नो ओटली श्रद्धा कैसेट कंपनी द्वारा तैयार की गई नंद संतो के कीर्तन की सीडी, ओडियो कैसेटका विमोचन किया गया था । श्रीहरि के तीनो अपर स्वरूपों ने सुंदर आशीर्वाद दिया था । सभा में उपस्थित सभी हरिभक्तों ने महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया । सहजानंद गुरुकुल के सभी बच्चों को पूज्य लालजी महाराजश्रीने अपने हाथों से प्रसाद देकर प्रसन्नता का सुख प्रदान किया । इस प्रकार हर्षोल्लास के साथ जन्मोत्सव मनाया गया था ।

- गोरधनभाई वी. सीतापरा

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में अलौकिक झूलोत्सव दर्शन

श्रावण महीने का शुभारंभ प्रत्येक मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष विविध प्रकार से झूलों को सजाकर झूलाने का दिव्य लाभ मिलता है । इस अवसर पर अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पूज्य महंत स्वामी की प्रेरणा से सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सामने विविध प्रकार से झूले को सजाकर (कभी फूल से, फल से, शाक से, पंचमेवा से, राखी से, चोकलेट से, इमिनेशन इत्यादि से सजाकर) दर्शन का लाभ दिया जाता है । जिस में जेतलपुर के महंत स.गु. के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में कोठार के संत एवं पार्षद उत्तम सेवा करके हिरभक्तों को प्रसन्न किये थे । सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव आदिक देवों का ऐसा झूला अलंकृत किया जाता है कि जिसका दर्शन करके मुमुक्षुजीव अपने जन्म की सफलता मानते हैं ।

- कोठारी स्वामी

जेतलपुर मंदिरमें श्री रेवती बलदेव हरिकृष्ण महाराज के समक्ष भव्य झूलोत्सव दर्शन

सर्वोपरि तीर्थधाम जेतलपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पूज्य पी.पी. स्वामी तथा पू. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजीकी प्रेरणा से एवं पू. महंत के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज तथा घनश्याम महाराज के समक्ष श्रावण मास में विविध प्रकार के कलात्मक रंगबिरंगी फूल, फल, शाक, पंचमेवा, इमीनेशन अलंकारो से विविध धान्य आदि से झूले को सजाकर ठाकुरजी को झुलाते हुए सभी को दर्शन का लाभ दिया जाता है । दिव्य दर्शन का लाभ प्राप्त कर भक्तजन धन्यता का अनुभव करते हैं । श्रावण मास में जेतलपुर में दर्शन दर्शनार्थियों की खूब भीड़ लगती हैं ।

- कोठारी स्वामी

छपैयाधाम में अधिकमास धूम धाम से मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. गवैया ब्रह्मचारी स्वामी रामकृष्णानंदजी के आशीर्वाद से तथा महंत ब्र.स्वा. वासुदेवानंदजी की प्रेरणा से पवित्र प्रथम अधिक ज्येष्ठ मास में इष्टदेव बालस्वरूप घनश्याम महाराज की दिव्य प्रागट्यभूमि में पुरुषोत्तम मास को धूमधाम से मनाया गया था ।

जिस में मेघाणीनगर अहमदाबाद महिलामंडल, बापूनगर घनश्याम महिला मंडल, मुंबई, गोधरा, कलोल, घमासणा, जुंडाल, लतीपर, अहमदाबाद-नारायणपुरा के श्री जयंतीभाई पटेल, श्री रमणभाई इत्यादि हरिभक्तों के सहयोग से अधिक मास दरम्यान सभी उत्सव तुलसी विवाह, समूह होमात्मक महापूजा, समूह सत्यनारायण कथा श्री नरनारायण जन्म जयंती, तथा मेतपुर के पू. गोविंद स्वामी की प्रेरणा से श्री अमृतभाई रणछोड़भाई पटेल श्री विवेक के यजमान पद पर अधिक ज्येष्ठ शुक्ल-९ के दिन महाभिषेक अन्नकूट आदि धूम धाम से सम्पन्न किया गया था । मुंबई की श्रीमती

लीला बहन, डॉ. प्रदीपभाई तथा हिना बहन भावेशभाई के यजमान पद पर एकादशी एवं अमावास्या का उत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया ।

ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी के शुभ दिन छपैया धाम में विराजमान ठाकुरजी का वार्षिकोत्सव श्री रत्ना करशन भुडीया परिवार, श्री दक्षाबहन हरिप्रसाद, स्वामिनारायण, श्री शंभुभाई एच. पटेल तथा श्री भीखाभाई गोविंदभाई परमार एवं महिमा मंडल (नवावाडज) इसके साथ प.पू. गादीवालाश्री की हवेली अहमदाबाद की सां.यो. शांताबा, सां.यो मंजुबा, सांयो. भारतीबा, सां.यो. गीता बहन (पाटडीवाला) की प्रेरणा से गं.स्व. लाभुबहन दयालजीभाई (निरमावाला) इत्यादि हरिभक्तों के सहयोग से पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न किया गया । इस प्रसंग पर अयोध्या के संत मंडल-पार्षद, नाथद्वारा मंदिर केमहंत स्वामी धर्मस्वरूपदासजी आदि संत उपस्थित होकर प्रसंग को सुशोभित किये थे ।

यहाँ के बाल स्वरूप घनश्याम महाराज के जन्म स्थान मंदिर के निर्माण में सत्संगी बहनोंने श्रद्धा भक्ति के साथ नींव में ईंट गारा का सेवा कार्य करके अलौकिक लाभ लिया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी कृपा से छपैया धाम में सुन्दर प्रवृत्ति चल रही है ।

- कनुभाई दवे, छपैया

वडनगर मंदिर

पवित्र अधिक मास में ऐतिहासिक नगरी वडनगर में श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशेलेन्द्रप्रसादजी महाराश्री की आज्ञा से तथा मंहत स.गु. स्वामी हरिसेवादासजी की प्रणा से श्री दशरथभाई लक्ष्मणदास के यजमान पद पर धूमधाम से संपन्न हुआ ।

प्रासंगिक सभा में शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा शा. विश्वप्रकाशदासजी एवं मोदी नवीनभाई ने श्रीहरि तथा धर्मकुल की महिमा का सुन्दर वर्णन किया । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने यजमान परिवार को तथा समस्त सभा को हार्दिक आशीर्वाद देकर प्रसन्न किया था ।

- मोदी हर्षदभाई हरिलाल

मुक्तिनाथ (नैपाल)

मुक्तिनाथ भगवान का आश्रय स्थान तथा सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की तपो भूमि पुल्हाश्रम में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री नीलकंठवर्णी के दिव्य चरणों में यहाँ के अपने मंदिर - धर्मशाला में गुरु पूर्णिमा का उत्सव धूमधाम से मनाया गया । श्रीजी स्वामी, संत स्वामी तथा लोकनाथ स्वामी तथा तीर्थयात्रियों ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रतिमा का पूजन-अर्चन किया था । तीर्थयात्रियों को धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की महिमा सुंदर ढंग से समझाई गयी । *- साधु लोकनाथ*

जुंडाल मंदिर में भक्त चिंतामणी पारायण

जुंडाल श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा प्रति मास दूसरे रविवार को श्रीमद् भक्तचिंतामणी का पारायण शा. स्वामी रामकृष्णदासने वक्तापद पर होता है । ता. १२-८-२००७ तक कुल १० पारायण हुआ है । १२ आयोजन निश्चित किया गया है । इस कथा का लाभ बहुत लोग लेते हैं । इस प्रसंग पर पी.पी. स्वामी भी उपस्थित रहते हैं । *- हिमंतभाई*

जेतलपुल वाडी (संस्कृत-पाठशाला) के संतो द्वारा गाँओंमें सत्संग सभा

आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा संस्थापित श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाला में अभ्यास करते छोटे-छोटे विद्यार्थी संत प.पू. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा लेकर अलग-अलग गाँवो में सत्संग सभा का आयोजन करते हैं । जिस में विगत महीने में नीचे लिखे गाँवो में सत्संग सभा हुई - असलाली, गामडी, मनीपुर, साणंद, मेघाणीनगर, वाडज, नवावाडज, कलोली, महीज, नारायणनगर, भात, काशीन्द्रा । प्रत्येक गाँव में बडी संख्या में हरिभक्त महाराजकी दिव्य लीलाओं का श्रवण करते एवं अन्य लाभ भी लेते हैं । वाडी के संचालक श्रीहरिओंप्रकाशदास द्वारा चल रही सत्संग सभा प्रशंसनीय है । जिस के लिये पूज्य महाराजश्री आशीर्वाद देते हैं । *- शा. भक्तिनंदनदास*

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

श्री स्वामिनारायण मंदिर नूतन हळवद

यहाँ के श्री स्वामिमारायण मंदिर में आषाढ शुक्ल-१५ गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन प्रासंगिक सभा में साधु श्रीजीस्वरूपदासजी तथा संत मंडलने धर्मकुल माहात्म्य के साथ धर्मवंशी आचार्य ही हम सभी के गुरु है, इस प्रकार सुंदर महिमा का निरूपण किया था । बाद में आचार्य महाराजश्री की प्रतिकृति का पूजन अर्चन करके आरती की गयी थी। बहुत सारे हरिभक्तों ने चातुर्मास में नियम लिया था ।

- तारबुंदिया मनसुख बी.

विदेश सत्संग वृत्तान्त

शिकागो मंदिर का ९ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

सर्वावतारी श्रीहरि की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजीकी प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ९ वाँ पाटोत्सव हरिभक्तों के साथ सहकार से धूमधाम के साथ मनाया गया । इस अवसर पर श्रीमद् सत्संगिजीवन के तीसरे प्रकरण की कथा महंत स्वामी तथा पूजारी स्वामी हरिनंदनदासने की थी । पाटोत्सव के शुभ दिन ठाकुरजीकी को अभिषेक के बाद अन्नकूंट अर्पित किया गया था । ठाकुरजी को सुन्दर वस्त्रालंकार से अलंकृत किया गया था । इस प्रसंग पर पुस्योत्तमभाई तथा गौरीबहन गोधाणी, श्री ओधवजीभाई एवं सविताबहन धानाणी, श्रीहरिभाई सविताबहन खेर, श्री कमलेशभाई शाह आदि हरि भक्त यजमान बनकर सुंदर लाभ लिये थे । पारायण के समय शा. केशवचरणदासजी एवं घनश्याम स्वामी ने भगवान के सुन्दर माहात्म्य का वर्णन किया था । प्रमुखश्री जगदीशभाई ने आगामी १० वाँ पाटोत्सव धर्मकुल की उपस्थिति में सम्पन्न होगा इस में संत भी पधारेंगे ऐसी घोषणा की थी । इस प्रसंग पर युवकों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम दिखाकर सभीको आनंदित किया था ।

यहाँ की महिलाएं तथा वृद्ध हरिभक्त सेवा करके प्रेरणास्म बने रहे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रवृत्ति अच्छी चल रही है ।

- प्रवीण भगत

लेस्टर (U.K., I.S.S.O.) मंदिर में गुरुपूर्णिमा महोत्सव सम्पन्न

सर्वावतारी पूर्ण पुस्योत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभुने जगत के जीवों का कल्याण करने के लिये श्री स्वामिनारायण संप्रदाय की स्थापना करके तथा अपने स्थान पर समस्त आश्रितों के गुस्मद पर उत्तर-दक्षिण दो विभाग करके आचार्य की स्थापना की । जिस में उत्तर विभाग के श्री नरनारायणदेव के आदि आचार्य श्री १००८ श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज को गद्दी पर प्रतिष्ठित किया । उसी परम्परा में श्री नरनारायणदेव पीठ के ७ वें विद्यमान आचार्य प.पू.ध.धु. महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के गुस्त्रण से मुक्त होने के लिये लेस्टर (श्री स्वामिनारायण मंदिर में गुस्मूर्णिमा महोत्सव का ३०-७-२००७ के दिन भव्य आयोजन किया गया था ।

जिस में प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से भारत से पधारे हुए संत शा.स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी तथा सर्वेश्वरदासजी हरिभक्तों के विशाल समुदाय के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन वेदोक्त विधि से किये थे । इस के बाद हरिभक्तों को धर्मकुल की महिमा समझाये थे । कार्यक्रम के अंत में कीर्तन-भजन के बाद भोजन का आयोजन किया गया था । जिस में लेस्टर तथा अगल-बगल के विस्तार में रहनेवाले हरिभक्त बडी संख्या में उपस्थित थे ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से लेस्टर में बडे सुन्दर ढंग से प्रति शनिवार को सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है । जिस में बडी संख्या में हरिभक्त उपस्थित होकर सत्संग का लाभ लेते हैं ।

- सहमंत्री - किरण भावसार, लेस्टर

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के संत (वर्तमान में लालोडा (इडर) मंदिर में सेवा पूजा कर रहे थे) स.गु. स्वामी मोहनप्रसाददासजी गुरु स.गु. शा. स्वामी घनश्यामजीवनदासजी अषाढ कृष्ण-११ को ९-८-२००७ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर : पार्षद श्री भीमजी भगत गुरु स.गु. पुराणी पुस्योत्तमचरणदासजी ता. ७-८-२००७ के दिन श्रीजी महाराजना अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

लसुन्द्रा : श्री स्वामिनारायण मंदिर के पूर्व कोठारी श्री काशीभाई बेचरभाई पटेल ता. २८-७-२००७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अरोडा (इडरदेश) : श्री छगनभाई वीरचंदभाई मखी ता. २८-७-२००७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

अहमदाबाद : श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल के श्री नन्दकिशोरभाई ठाकोरलाल अग्रवाल (उ. ८० वर्ष) ता. २७-७-२००७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।



कांकरिया मंदिर में श्रावण मास में ठाकुरजी को झूले में झूलाते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



जेतलपुर मंदिर में श्रावण मासमें कथा करते हुए शा. भक्तिनंदनदास ।

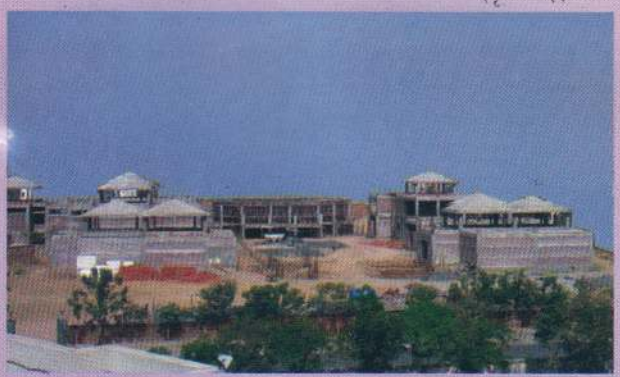


जेतलपुर मंदिर में श्री रेवती बलदेवजी महाराज का फलों से अलंकृत झूले में दर्शन ।





गांधीनगर (सेक्टर २३) श्री स्वामिनारायण मंदिर में कलात्मक झूला दर्शन ।





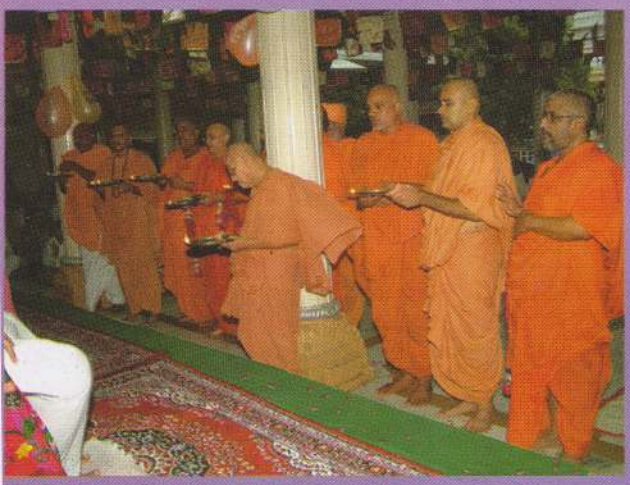
प.पू. बडे महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम का चल रहा भव्य निर्माण कार्य की तस्वीर ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month
under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08





चित्र में जो देखाई दे रहा है वह प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री द्वारा खींची गयी तस्वीर में श्री नरनारायण देव पीठ के ८ वें भावि पाठाधीश्वर अपने दादा अर्थात् अपने इष्टदेव सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव एवं रंगमहोल तथा अक्षरमहल के घनश्याम महाराज आदि स्वरूपों के लिये एक दिन बिना भूले (ट्यूशन का कार्य भले भूल जाय) पार्षदो के साथ स्वा. बाग के बगीचे से स्वयं चमेली, जूही, मोगरा इत्यादि के फूल चुनकर अपने नाजुक हाथों से सूई धागा लेकर कलात्मक ढंग से पुष्पहार बनाते हुए दर्शन दे रहे है ।



पू. भावि आचार्य १०८ श्री लालजी महाराजश्री के १० वें पाट्योत्सव प्रसंग पर पूजनीय संत समूह आरती उतारे हुए ।



Praful Kharsani

सीडनी (ओस्ट्रेलिया) अपने मंदिर में दर्शन के लिये आयोजित पदयात्रा ।